द शूटर

सूरजपुर जिले से प्रकाशित
प्रथम हिन्दी दैनिक

प्रधान संपादक- रूपेश दुबे: 9826169678
संपादक- प्रवीण दुबे: 9165083700

वर्ष-14 अंक-166 | प्रतापपुर, जिला- सूरजपुर छ.ग. से प्रकाशित | रविवार 02 अगस्त 2026 | पृष्ठ-8 | मूल्य- 2 रूपये

फाइलों में दौड़ रही बिजली, अंधेरे में जी रहे 38 गांव: जिम्मेदारों की उदासीनता से बढ़ी वनांचल की पीड़ा

*** दस महीने पहले मिली स्वीकृति पर भी शुरू नहीं हुआ काम, अधिकांशत: सोलर प्लांट ठप्प**

ओड़गी, 01 अगस्त 2026 द शूटर। सूरजपुर जिले के ओड़गी विकासखंड का सुदूर वनांचल क्षेत्र चांदनी बिहारपुर आज भी विकास की उस बुनियादी सुविधा का इंतजार कर रहा है, जिसे शहरों में लोग सामान्य मानते हैं। यहां की 17 ग्राम पंचायतों के 38 से अधिक गांवों में सूरज ढलते ही अंधेरा जिंदगी का हिस्सा बन जाता है। वर्षों पहले लगाए गए सोलर पावर प्लांट अब रखरखाव के अभाव में लगभग बंद हो चुके हैं, जबकि करीब दस महीने पहले स्वीकृत विद्युत विस्तार योजना भी अब तक फाइलों से बाहर नहीं निकल सकी। नतीजा यह है कि हजारों ग्रामीण आज भी रोशनी, सुरक्षा और सामान्य जीवन जैसी बुनियादी जरूरतों से जूझ रहे हैं।

रखरखाव रुका तो बुझने लगी गांवों की रोशनी

करीब दस वर्ष पहले क्रेडा के माध्यम से क्षेत्र में सोलर पावर प्लांट और सोलर होम लाइट सिस्टम लगाए गए थे। शुरूआती वर्षों में इनसे लोगों को काफी राहत मिली, क्योंकि तकनीशियन नियमित रूप से बैटरियों की देखभाल करते थे, इन्वर्टर और कंट्रोल पैनल की मरम्मत करते थे तथा छोटी तकनीकी खराबियों को समय पर दूर कर देते थे। लेकिन तकनीशियनों की व्यवस्था समाप्त होने के बाद पूरा सिस्टम धीरे-धीरे दम तोड़ने लगा। ग्रामीणों का कहना है कि आज क्षेत्र के अधिकांश सोलर प्लांट बंद पड़े हैं और जो कुछ बचे हैं, वे भी खराब होने की कगार पर हैं।

दस महीने पहले मिली स्वीकृति, लेकिन काम आज तक शुरू नहीं

ग्रामीणों के अनुसार करीब दस महीने पहले क्षेत्र की 11 ग्राम पंचायतों में बिजली विस्तार कार्य को प्रशासनिक स्वीकृति मिल गई थी। कोल्हुआ, महुली, चोगा, करौटी, खैरा, कछिया, कछवारी, नवडीहा, बाक और असुरा सहित कई गांवों में बिजली पहुंचने की उम्मीद जगी थी। लेकिन आज तक न बिजली के खंभे लगाए गए और न ही लाइन विस्तार का कार्य शुरू हुआ। इससे ग्रामीणों में यह धारणा बनने लगी है कि योजनाएं केवल कागजों तक सीमित होकर रह जाती हैं।

टाइगर रिजर्व से लगे गांवों में अंधेरा बना सबसे बड़ा खतरा

चांदनी बिहारपुर क्षेत्र की अधिकांश बस्तियां गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान एवं टाइगर रिजर्व से लगी हुई हैं। ऐसे में अंधेरा यहां केवल असुविधा नहीं, बल्कि जान का जोखिम भी है। हाथी, भालू, जंगली सूअर और अन्य वन्यजीवों की आवाजाही रात के समय बढ़ जाती है। वहीं सांप और बिच्छू जैसे जहरीले जीवों का खतरा भी बना रहता है। बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है, महिलाएं और बुजुर्ग असुरक्षित महसूस करते हैं, जबकि मोबाइल चार्ज करने जैसी सामान्य सुविधा के लिए भी कई किलोमीटर की दूरी तय करनी पड़ती है।

शिकायत का इंतजार क्यों, जब निगरानी विभाग की जिम्मेदारी है

ग्रामीणों का कहना है कि जब भी अधिकारी या कर्मचारी से बात की जाती है तो अक्सर जवाब मिलता है कि शिकायत नहीं मिली या जानकारी नहीं थी। यही बात लोगों को सबसे ज्यादा परेशान करती है। उनका कहना है कि दूरस्थ क्षेत्रों की नियमित निगरानी करना, व्यवस्थाओं का निरीक्षण करना और समय रहते समस्याओं का समाधान करना विभाग की जिम्मेदारी है। यदि अधिकारी गांवों तक पहुंचकर वास्तविक स्थिति का जायजा लें, तो कई समस्याएं शिकायत बनने से पहले ही दूर हो सकती हैं।

सीएम हेल्पलाइन में शिकायतें, फिर भी नहीं बदले हालात

बिजली और सोलर व्यवस्था की खराब स्थिति को लेकर ग्रामीणों ने कई बार मुख्यमंत्री हेल्पलाइन में शिकायत दर्ज कराई। बंद पड़े सोलर प्लांटों की मरम्मत, तकनीशियनों की पुनर्नियुक्ति और स्वीकृत बिजली विस्तार कार्य जल्द शुरू कराने की मांग भी की गई। लेकिन ग्रामीणों का आरोप है कि कई मामलों में केवल औपचारिक कार्रवाई दिखाकर शिकायतों का निराकरण कर दिया जाता है, जबकि गांवों की स्थिति में कोई सुधार नहीं होता।

लापरवाही से सरकार और जनप्रतिनिधियों की छवि भी हो रही प्रभावित

स्थानीय लोगों का मानना है कि सरकार योजनाएं बनाती है, बजट स्वीकृत करती है और जनप्रतिनिधि भी विकास कार्यों के लिए प्रयास करते हैं। लेकिन जब जिम्मेदार अधिकारी और कर्मचारी अपनी जवाबदेही निभाने के बजाय बहानों का सहारा लेते हैं, तो उसका सीधा असर सरकार की छवि पर पड़ता है। जनता के बीच यह संदेश जाता है कि योजनाएं केवल घोषणाओं तक सीमित हैं, जबकि वास्तविक समस्या योजनाओं के क्रियान्वयन में लापरवाही की है।

ग्रामीणों की मांग, अब बहाने नहीं समाधान चाहिए

ग्रामीणों ने जिला प्रशासन, कलेक्टर और क्रेडा विभाग से पूरे क्षेत्र का विशेष सर्वे कराने, बंद पड़े सभी सोलर प्लांटों की तत्काल मरम्मत कराने, खराब उपकरण बदलने, तकनीशियनों की पुनर्नियुक्ति करने तथा दस महीने पहले स्वीकृत बिजली विस्तार कार्य को तत्काल शुरू कराने की मांग की है। क्योंकि यहां के रहवासियों के लिए बिजली अब केवल एक सुविधा नहीं, बल्कि सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य और सम्मानजनक जीवन का आधार है। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर फाइलों में मंजूर हो चुकी बिजली इन गांवों तक कब पहुंचेगी और जिम्मेदार विभाग अपनी जवाबदेही कब निभाएगा..?

सियानगुड़ी डे-केयर सेंटर में श्रद्धा एवं उल्लास के साथ मनाया गया गुरु पूर्णिमा पर्व

अंबिकापुर/द शूटर। अनामिका वेलफेयर सोसायटी एवं समाज कल्याण विभाग के संयुक्त तत्वाधान में अंबिकापुर के मनेन्द्रगढ़ रोड में संचालित सियानगुड़ी डे-केयर सेंटर में गुरु पूर्णिमा का पावन पर्व श्रद्धा, भक्ति एवं उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में वरिष्ठ नागरिकों ने सहभागिता कर गुरु परंपरा के महत्व एवं भारतीय संस्कृति के आदर्शों का स्मरण किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ संस्था सहयोगी जानकी सिंह द्वारा सभी वरिष्ठ नागरिकों का विधिवत चरण धोकर उनका सम्मान किया गया एवं तत्पश्चात सीमा बंसल, मंजु शर्मा, रिकी शर्मा सहयोगी द्वारा उन्हें शॉल, श्रीफल एवं माल्यार्पण कर आदरपूर्वक सम्मानित किया गया। इस भावपूर्ण सम्मान से सभी वरिष्ठ नागरिक भावविभोर हो उठे तथा उन्होंने संस्था के प्रति अपना आभार व्यक्त किया।

संचालिका रीता अग्रवाल द्वारा अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा कि गुरु हमारे जीवन के सच्चे मार्गदर्शक हैं। उनके बताए हुए आदर्शों, संस्कारों एवं जीवन मूल्यों का अनुसरण कर ही एक सशक्त, संस्कारित एवं आदर्श समाज का निर्माण किया जा सकता है।

इस अवसर पर संस्था द्वारा उपस्थित कार्यक्रम के दौरान महेंद्र प्रताप जायसवाल के नेतृत्व में गायत्री मंत्र का सामूहिक पाठ एवं प्रार्थना की गई तथा सभी ने श्रद्धापूर्वक पूजन-अर्चन कर गुरुजनों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। कार्यक्रम में वरिष्ठ नागरिक अनंत राम कोस्टा, सुषील कुमार श्रीवास्तव, महेन्द्र प्रताप जयसवाल, के.के. सिंह, अंजू श्रीवास, एस.एस. शर्मा व संस्था के सभी कर्मचारी एवं सहयोगीगण सक्रिय रूप से उपस्थित रहे। सभी वरिष्ठ नागरिकों ने आत्मीय एवं पारिवारिक वातावरण में एक साथ भोजन ग्रहण किया तथा संस्था के इस स्नेहपूर्ण प्रयास की सराहना की।

स्मार्ट मीटर और बढ़े बिजली बिलों के विरोध में कांग्रेस का आंदोलन तेज, समाधान नहीं होने पर विद्युत विभाग घेराव की चेतावनी

बैकुण्ठपुर। ब्लॉक कांग्रेस कमेटी (शहर) बैकुण्ठपुर की मासिक बैठक शनिवार, 1 अगस्त 2026 को जिला कांग्रेस अध्यक्ष प्रदीप गुप्ता एवं ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष आशीष यादव (लल्ला) के नेतृत्व में आयोजित की गई। बैठक में क्षेत्र की विभिन्न जनसमस्याओं पर चर्चा के साथ विशेष रूप से प्रदेश में लगाए जा रहे स्मार्ट बिजली मीटरों और उनके कारण उपभोक्ताओं पर पड़ रहे अतिरिक्त बिजली बिलों के आर्थिक बोझ को प्रमुख मुद्दा बनाया गया।

बैठक में कांग्रेस पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने कहा कि स्मार्ट मीटर लगाए जाने के बाद अनेक उपभोक्ताओं ने अपेक्षा से अधिक बिजली बिल आने की शिकायत की है, जिससे आम और मध्यमवर्गीय परिवारों की आर्थिक स्थिति प्रभावित हो रही है। उपस्थित नेताओं ने कहा कि यदि इस समस्या का समय रहते समाधान नहीं किया गया तो कांग्रेस जनहित में चरणबद्ध आंदोलन शुरू करेगी और विद्युत विभाग का घेराव कर विरोध प्रदर्शन करेगी।

बैठक में सर्वसम्मति से मांग की गई कि वर्तमान में लगाए गए स्मार्ट मीटर हटाकर पुराने बिजली मीटर पुनः लगाए जाएं। साथ ही उपभोक्ताओं को जारी किए गए अतिरिक्त एवं कथित रूप से गलत बिजली बिलों को तत्काल निरस्त किया जाए, ताकि आम नागरिकों को राहत मिल सके। कांग्रेस नेताओं ने कहा कि बिजली जैसी आवश्यक सेवा में किसी भी प्रकार की अनियमितता या अतिरिक्त आर्थिक भार जनता के हितों के विपरीत है। जिला कांग्रेस अध्यक्ष प्रदीप गुप्ता ने कहा कि कांग्रेस हमेशा जनता के अधिकारों और हितों की लड़ाई लड़ती रही है तथा भविष्य में भी आम नागरिकों की समस्याओं को लेकर संघर्ष जारी रखेगी। ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष आशीष यादव (लल्ला) ने कहा कि यदि विभाग और शासन ने जनता की शिकायतों पर गंभीरता नहीं दिखाई तो व्यापक जनआंदोलन किया जाएगा, जिसकी पूरी जिम्मेदारी संबंधित विभाग और सरकार की होगी।

शराब पीकर स्कूल आने वाले प्रतापपुर के तीन शिक्षकों के खिलाफ निलंबन की कार्यवाही

*** खंड शिक्षा अधिकारी के प्रतिवेदन के बाद जिला शिक्षा अधिकारी सूरजपुर ने की कार्यवाही**

प्रतापपुर/द शूटर। शराब पीकर स्कूल आने वाले तीन शिक्षकों के खिलाफ निलंबन की कार्यवाही हुई है। उक्त कार्यवाही जिला शिक्षा अधिकारी सूरजपुर ने खंड शिक्षा अधिकारी प्रतापपुर के प्रतिवेदन के बाद की है। उल्लेखनीय है कि प्राथमिक शाला बड़वार के सहायक शिक्षक कन्हैया लाल राठिया, पहाड़करवां के ठाकुर प्रसाद तथा बटहिया पारा के खुलेश्वर राम के विरुद्ध शराब पीकर स्कूल आने तथा अन्य तरह की शिकायतें मिली थीं।जानकारी के बाद बीईओ एमएस धुर्वे ने उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी किया था। कलेक्टर रेन जमील तथा प्रभारी जिला शिक्षा अधिकारी लता बेक के निर्देश पर उन्होंने मामले की जांच कर उच्च कार्यालय को जांच प्रतिवेदन भेजा था।जांच के बाद अब तीनों शिक्षकों के विरुद्ध निलंबन की कार्यवाही हुई है।आदेश में कहा गया है कि कन्हैया लाल राठिया 29 जुलाई को विद्यालय में नशे की हालत में पाये जाने, अध्यापन कार्य में रूची नहीं लेने, अध्ययन अध्यापन में व्यवधान उत्पन्न करते पाए गए थे।इनका आचरण छत्तीसगढ़ सिविल सेवा आचरण नियम का उल्लंघन है जिस कारण उन्हें निलंबित करते हुए मुख्यालय विकासखण्ड शिक्षा कार्यालय सूरजपुर नियत किया गया है। ठाकुर प्रसाद को लेकर भी इसी तरह के आरोप प्रमाणित हुए थे और निलंबन के बाद उनका मुख्यालय विकासखण्ड शिक्षा कार्यालय प्रेमनगर नियत किया गया है।वहीं निलंबन के बाद खुलेश्वर राम विकासखण्ड शिक्षा कार्यालय ओड़गी नियत किया गया है।

किरायेदार का सत्यापन केवल नियम नहीं, पूरे समाज की सुरक्षा का भरोसा

सूरजपुर, 1 अगस्त 2026 द शूटर। कई बार एक छोटी-सी लापरवाही पूरे मोहल्ले की शांति पर भारी पड़ जाती है। बिना पहचान और सत्यापन के किसी अनजान व्यक्ति को किराये पर रखना भविष्य में बड़ी परेशानी का कारण बन सकता है। इसी खतरे को देखते हुए प्रशासन ने जिले की सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत बनाने की दिशा में अहम फैसला लिया है। अब जिले में किसी भी व्यक्ति को मकान, दुकान या अन्य भवन किराये पर देने से पहले उसका पुलिस सत्यापन कराना अनिवार्य होगा।पुलिस अधीक्षक आईपीएस योगेश कुमार पटेल के प्रतिवेदन पर कलेक्टर एवं कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी श्रीमती रेना जमील ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा 163 के तहत आदेश जारी किया है। यह आदेश जिले के सभी शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया गया है और अगले 60 दिनों अथवा नए आदेश तक प्रभावी रहेगा।अब प्रत्येक मकान मालिक को किरायेदार का नाम, स्थायी पता, मोबाइल नंबर, पहचान पत्र सहित आवश्यक जानकारी संबंधित थाना या चौकी में जमा करानी होगी। बिना पुलिस सत्यापन के किसी भी व्यक्ति को किराये पर रखना नियमों का उल्लंघन माना जाएगा। इतना ही नहीं, होटल, लॉज, ढाबों और निजी संस्थानों में

कार्यरत कर्मचारियों का पूरा विवरण भी संबंधित थाना में उपलब्ध कराना अनिवार्य रहेगा।प्रशासन का मानना है कि कई बार अपराधी अपनी वास्तविक पहचान छिपाकर किराये के मकानों में रहते हैं और वारदातों को अंजाम देकर फरार हो जाते हैं। समय पर सत्यापन होने से ऐसे लोगों की पहचान आसान होगी और अपराधों पर प्रभावी अंकुश लगाया जा सकेगा।

आदेश में यह भी कहा गया है कि यदि किसी किरायेदार या उसके यहां आने-जाने वाले व्यक्ति की गतिविधियां संदिग्ध दिखाई दें तो इसकी सूचना तुरंत पुलिस को देना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी होगी। होटल संचालकों को भी ऐसे मामलों में तत्काल पुलिस को सूचित करना होगा।कलेक्टर ने स्पष्ट किया है कि यह आदेश जनहित, कानून-व्यवस्था और नागरिकों की सुरक्षा को ध्यान में रखकर जारी किया गया है। आदेश का उल्लंघन भारतीय न्याय संहिता, 2023 की धारा 223 के तहत दंडनीय होगा। पुलिस अधीक्षक आईपीएस योगेश कुमार पटेल ने जिलेवासियों से अपील करते हुए कहा है कि किरायेदार का सत्यापन केवल एक सरकारी औपचारिकता नहीं, बल्कि अपने परिवार, पड़ोस और पूरे समाज को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी है। यदि हर नागरिक इस व्यवस्था में अपना सहयोग देगा, तो सूरजपुर को सुरक्षित, शांतिपूर्ण और अपराधमुक्त बनाने का लक्ष्य और अधिक मजबूत होगा।

स्कार्फ में दिखा सेवा का संकल्प, बच्चों ने वृक्ष लगाकर और शहीदों को नमन कर दिया समाज को प्रेरक संदेश

*** विश्व स्कार्फ दिवस पर ओड़गी विकासखंड के विद्यालयों में विविध आयोजन, सेवा, अनुशासन और पर्यावरण संरक्षण का लिया संकल्प**

ओड़गी, 01 अगस्त 2026 द शूटर। एक छोटा सा स्कार्फ जब किसी बच्चे के गले में सजता है, तो वह केवल वर्दी का हिस्सा नहीं रहता, बल्कि सेवा, अनुशासन, देशभक्ति और मानवता के प्रति समर्पण की पहचान बन जाता है। विश्व स्कार्फ दिवस पर शनिवार को ओड़गी विकासखंड के विभिन्न विद्यालयों में कुछ ऐसा ही उत्साह देखने को मिला, जहां बच्चों ने वृक्षारोपण किया, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को याद किया और पर्यावरण संरक्षण का संदेश देकर समाज को नई प्रेरणा दी।भारत स्काउट एवं गाइड्स के जिला अध्यक्ष शंकरलाल यादव और जिला मुख्य आयुक्त रितेश गुप्ता के निर्देश तथा जिला संघ की वार्षिक कार्ययोजना के तहत आयोजित कार्यक्रम जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन आयुक्त लता बेक तथा विकासखंड शिक्षा अधिकारी मोतीलाल राजवाड़े के मार्गदर्शन में संपन्न हुए। कार्यक्रम में जिला सचिव गोवर्धन सिंह की विशेष उपस्थिति रही।शासकीय माध्यमिक शाला खर्रा में स्काउट मास्टर कुंजलाल यादव के नेतृत्व में अतिथियों का स्वागत किया गया। इसके बाद विद्यार्थियों ने पौधारोपण किया और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के चित्र बनाकर तथा

प्रदर्शनी लगाकर देश के अमर वीरों को श्रद्धांजलि अर्पित की।शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय लांजित में प्राचार्य एवं स्काउट मास्टर संजय गोडे ने विद्यार्थियों को विश्व स्कार्फ दिवस के महत्व से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि स्काउट-गाइड आंदोलन बच्चों में नेतृत्व क्षमता, अनुशासन, आत्मविश्वास और समाजसेवा की भावना विकसित करने का सशक्त माध्यम है।इधर प्राथमिक शाला जरगापारा में एडवांस कब मास्टर चंद्रिका सिंह के नेतृत्व में स्काउट एवं गाइड्स की कब विधि के अनुसार ध्वज शिष्टाचार का आयोजन किया गया। नियमित रूप से विद्यालय आने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित कर पुरस्कार दिए गए। साथ ही बच्चों के लिए न्योता भोज का आयोजन भी किया गया, जिससे उनके चेहरे खुशी से खिल उठे।

कार्यक्रम के दौरान विभिन्न स्थानों पर पौधारोपण के साथ बच्चों और ग्रामीणों के बीच सीड बॉल वितरित किए गए। उपस्थित लोगों ने अधिक से अधिक पौधे लगाने और पर्यावरण संरक्षण में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाने का संकल्प लिया।इस अवसर पर जिला सचिव गोवर्धन सिंह, विकासखंड सचिव कुंजलाल यादव, प्राचार्य संजय गोडे, देवशरण सिंह, बृजलाल यादव, उत्तमचंद गुर्जर, अशोक गुर्जर, चंद्रिका सिंह, नयनन गिरी, राजूदास बांधव, हीरामणी देवांगन, फूलेश्वरी किरवानी, मुक्ताजली बेहरा सहित बड़ी संख्या में शिक्षक, ग्रामीण, स्काउट-गाइड सदस्य और छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

भाजयुमो सरगुजा ने नाबालिक आदिवासी बालिका के साथ हुए दुष्कर्म के विरोध में किया अपराधी का पुतला दहन एवं सौंपा ज्ञापन

अंबिकापुर। द शूटर। भारतीय जनता पार्टी जिला अध्यक्ष भारत सिंह सिसौदिया के आह्वान पर, सरगुजा जिले में नाबालिग आदिवासी बच्ची के साथ हुए जघन्य दुष्कर्म के विरोध में भाजपा अनुसूचित जनजाति मोर्चा और भारतीय जनता युवा मोर्चा द्वारा विरोध प्रदर्शन कर आरोपी का पुतला दहन किया गया।

जानकारी के मुताबिक आरोप है कि कांग्रेस के परसा मंडल अध्यक्ष एवं पूर्व सरपंच एवं उनके परिजनों द्वारा नाबालिक के परिवार के लोगों को पैसा का प्रलोभन देकर मामले को शांत कर समझौत करने का भी निरंतर दबाव बनाया गया, जो कि काफी निंदनीय एवं दुर्भाग्यपूर्ण है। लेकिन परिजनों द्वारा मामले को गंभीरता से लेते हुए इसे अस्वीकार कर पुलिस प्रशासन को सूचित कर उनसे कार्यवाही की मांग की गई है। नाबालिग आदिवासी बालिका के साथ हुए इस अमानवीय घटना से क्षेत्र में भारी आक्रोश व्याप्त है।

भाजयुमो समलाया मंडल एवं परसा मंडल के कार्यकताओं द्वारा आरोपी तरुण जायसवाल के कृत्य के विरोध में उसका पुतला दहन कर आक्रोश व्यक्त किया।

पुतला दहन के दौरान जिला महामंत्री विनोद हर्ष, महामंत्री द्वय अरुणा सिंह, जन्मेजय मिश्रा, रवि विश्वकर्मा, समीर श्रीवास्तव, अनीश सिंह, अविनाश मंडल, मंडल अध्यक्ष आयुष दुबे, रोहन मंडल एवं युवा मोर्चा के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

सशक्त नारी फाउंडेशन की ओर से कर्सिव हैंडराइटिंग प्रतियोगिता सफलतापूर्वक संपन्न

भिलाई/द शूटर। सशक्त नारी फाउंडेशन द्वारा आयोजित ऑनलाइन एवं ऑफलाइन कर्सिव हैंडराइटिंग प्रतियोगिता सफलतापूर्वक संपन्न हुई। इस प्रतियोगिता में बच्चों, युवाओं एवं महिलाओं ने अत्यंत उत्साह के साथ भाग लिया। केवल भिलाई-दुर्ग ही नहीं, बल्कि विभिन्न राज्यों एवं अनेक शहरों से प्रतिभागियों ने अपनी शानदार सहभागिता दर्ज कराते हुए प्रतियोगिता को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया।

प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों एवं प्रतिभागियों में सुंदर लेखन (कर्सिव हैंडराइटिंग) के प्रति रुचि विकसित करना, उनके आत्मविश्वास को बढ़ाना तथा उनकी रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करना था। प्रतियोगिता को प्रतिभागियों का भरपूर उत्साह एवं सकारात्मक प्रतिसाद प्राप्त हुआ।

इस आयोजन को सफल बनाने में लिंग्वा स्पोकन के संस्थापक पूनम रावत व डी रावत एवं उनके संस्थान के विद्यार्थियों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। साथ ही ट्यूशन क्लासेस की अंश ट्यूशन क्लासेज की मंजू यादव तथा बीजापुर से अमृता मंडावी का भी सराहनीय सहयोग रहा। सशक्त नारी फाउंडेशन ने सभी सहयोगियों, प्रतिभागियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

संस्था की संस्थापिका डॉ. शाहिना ने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसी छोटी-छोटी प्रतियोगिताएँ बच्चों के भीतर सीखने की रुचि, आत्मविश्वास एवं सकारात्मक प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित करती हैं। उन्होंने कहा कि अच्छी हैंडराइटिंग केवल लेखन को आकर्षक नहीं बनाती, बल्कि विद्यार्थियों की प्रस्तुति को भी प्रभावशाली बनाती है, जिससे परीक्षा में बेहतर अंक प्राप्त करने में सहायता मिलती है। उन्होंने कहा कि समय-समय पर आयोजित होने वाली ऐसी प्रतियोगिताएँ बच्चों के व्यक्तित्व एवं कौशल विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और उन्हें भविष्य की बड़ी उपलब्धियों के लिए प्रेरित करती हैं।सभी प्रतिभागियों का उत्सावर्धन करते हुए संस्था की ओर से उन्हें इ सर्टिफिकेट प्रोवाइड किया गया।सशक्त नारी फाउंडेशन ने भविष्य में भी शिक्षा, कौशल विकास एवं व्यक्तित्व निर्माण से जुड़ी ऐसी रचनात्मक एवं प्रेरणादायक प्रतियोगिताओं का आयोजन निरंतर करते रहने का संकल्प व्यक्त किया। संस्था का उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग, विशेषकर बच्चों एवं महिलाओं को आगे बढ़ने के लिए सकारात्मक मंच उपलब्ध कराना है।अंत में संस्था ने प्रतियोगिता को सफल बनाने में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी प्रतिभागियों, शिक्षकों, अभिभावकों, सहयोगी संस्थानों एवं शुभचिंतकों का हृदय से धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया।

महलपारा वार्ड-9 में नाली निर्माण बना मुसीबत, सड़क किनारे डाली मिट्टी से आवागमन बाधित

*** बारिश में बढ़ी परेशानी, जलभराव से बीमारी का खतरा; निर्माण गुणवत्ता और ठेकेदार की कार्यशैली पर भी उठे सवाल**

बैकुण्ठपुर। जिला मुख्यालय बैकुण्ठपुर के महलपारा वार्ड क्रमांक-9 में चल रहे नाली निर्माण कार्य को लेकर स्थानीय लोगों में लगातार नाराजगी बढ़ती जा रही है। वार्डवासियों का आरोप है कि निर्माण कार्य के दौरान निकाली गई मिट्टी को नियमानुसार निर्धारित स्थान पर डंप करने के बजाय सड़क किनारे ही छोड़ दिया गया है, जिससे आम लोगों का आवागमन प्रभावित हो रहा है। लगातार हो रही बारिश के कारण यह मिट्टी कीचड़ में बदल चुकी है और लोगों को रोजाना भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

स्थानीय नागरिकों का कहना है कि निर्माण एजेंसी द्वारा कार्यस्थल पर सुरक्षा और सुविधा संबंधी आवश्यक व्यवस्थाएं नहीं की गई हैं। सड़क किनारे डाली गई मिट्टी के कारण वाहन चालकों के साथ-साथ पैदल चलने वालों को भी कठिनाई हो रही है। सबसे अधिक परेशानी स्कूली बच्चों, बुजुर्गों और महिलाओं को उठानी पड़ रही है, जिन्हें कीचड़ और फिसलन के बीच से होकर गुजरना पड़ रहा है। लोगों का कहना है कि निर्माण स्थल पर अस्थायी पैदल मार्ग तक नहीं बनाया गया, जबकि ऐसे कार्यों के दौरान सुरक्षित आवागमन की व्यवस्था करना आवश्यक होता है।

वार्डवासियों के अनुसार इस संबंध में नगर पालिका के अधिकारियों और संबंधित ठेकेदार को मौखिक रूप से कई बार अवगत कराया गया,

लेकिन अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। लगातार बारिश के कारण सड़क किनारे जमा मिट्टी बहकर रास्ते में फैल रही है, जिससे दुर्घटना की आशंका भी बढ़ गई है। निर्माण स्थल के समीप एक मकान के सामने खुदाई के कारण बने गड्ढे में बारिश का पानी भर गया है। स्थानीय लोगों का कहना है कि कई दिनों से पानी जमा रहने के कारण मच्छरों का प्रकोप बढ़ने लगा है। इससे डेंगू, मलेरिया और अन्य जलजनित एवं संक्रामक बीमारियों का खतरा भी बढ़ गया है। जबकि इन दिनों जिला प्रशासन स्वयं डेंगू एवं मौसमी बीमारियों की रोकथाम के लिए जागरूकता अभियान चला रहा है और लोगों से जलभराव रोकने की अपील कर रहा है। ऐसे में मुख्यालय के प्रमुख वार्ड में ही जलभराव की स्थिति लोगों के लिए चिंता का विषय बनी हुई है। वार्डवासियों ने निर्माण कार्य की गुणवत्ता पर भी सवाल उठाए हैं। उनका आरोप है कि नाली निर्माण के दौरान कंक्रीट को मजबूती देने के लिए वाइब्रेटर मशीन का उपयोग नहीं किया जा रहा, जिससे निर्माण कार्य की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है। स्थानीय लोगों का कहना है कि लगभग दस दिनों से कार्य जारी है, लेकिन इस दौरान ठेकेदार स्वयं निर्माण स्थल पर नहीं पहुंचे हैं। अधिकांश कार्य मजदूरों के भरोसे कराया जा रहा है, जिससे गुणवत्ता नियंत्रण और तकनीकी मानकों के पालन पर भी प्रश्नचिह्न लग रहे हैं। स्थानीय नागरिकों ने नगर पालिका प्रशासन से मांग की है कि सड़क किनारे पड़ी मिट्टी को तत्काल हटाकर सुरक्षित स्थान पर डंप कराया जाए, लोगों के आवागमन के लिए अस्थायी मार्ग बनाया जाए, जलभराव की समस्या का शीघ्र समाधान किया जाए तथा निर्माण कार्य की गुणवत्ता की तकनीकी जांच कराई जाए। लोगों का कहना है कि यदि समय रहते व्यवस्था नहीं की गई तो बारिश के मौसम में परेशानी और बढ़ सकती है तथा जनस्वास्थ्य पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

विशेष पिछड़ी जनजाति ने पांच सूत्रीय मांगों को लेकर राज्यपाल के नाम सौंपा ज्ञापन

*** सहायक शिक्षक भर्ती में पूर्व की भांति इनके लिए अलग से आरक्षण नहीं होने का आरोप**

अंबिकापुर/द शूटर। पांच सूत्रीय मांगों को लेकर विशेष पिछड़ी जनजाति के प्रांतीय अध्यक्ष उदय पंडो के नेतृत्व में राज्यपाल मुख्यमंत्री के नाम कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा गया है। इसमें छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा जारी सहायक शिक्षक भर्ती में जनजातीय समाज के लिए पूर्व की भांति अलग से आरक्षण की मांग प्रमुख है।

मांगों को लेकर जानकारी देते हुए उदय पंडो ने बताया कि इनमें सहायक शिक्षक भर्ती 2026 के आवेदन फार्म में उनके के लिए अलग विकल्प पुनः जोड़ा जाए, एसटी के कुल पदों में से 20% पद पिछड़ी जनजाति अभ्यर्थियों के लिए आरक्षित किए जाएं, उन्हें टी.ई.टी, डी.एल.एड/बी.एड में छूट देते हुए नियुक्ति के 5 वर्ष के अंदर पूर्ण करने की सुविधा दी जाए, पूर्व में भर्ती 400 से 500 सहायक शिक्षकों के लिए विभागीय डीएल.एड की व्यवस्था की जाए तथा उनके समाज के जिन अभ्यर्थियों ने डीएलएड कर लिया है, उन्हें 12वीं में 45% से कम अंक होने पर भी प्रशिक्षित श्रेणी में मानकर मान्यता दी जाए। उदय ने कि शासन इन पांचों बिंदुओं पर त्वरित निर्णय लेकर संबंधित विभाग को कार्यवाही के निर्देश दे ताकि विशेष पिछड़ी जनजाति के अभ्यर्थियों के शैक्षणिक और सामाजिक हित सुरक्षित हो सकें।ज्ञापन के दौरान प्रदेश अध्यक्ष उदय पण्डो के साथ संभागीय उपाध्यक्ष राजकुमार पण्डो, संभागीय सचिव गुड्डू राम पण्डो, जिला अध्यक्ष विधि पण्डो, दुर्गा मुढियार पहाड़ी कोरवा, प्रीति पहाड़ी कोरवा, अनंत पहाड़ी कोरवा, अमर पण्डो, रामलाल, कलेश्वर राम, केशरी पण्डो, बबली, ललीता, लक्ष्मी, सीतावती, कलावती, भोली, अमृता, रुपांजली, सुमित, रजनी पहाड़ी कोरवा, अभिशेक, किरण पण्डो, ओमप्रकाश पण्डो सहित अन्य उपस्थित थे।साथ ही उदय ने बताया कि 4 अगस्त को विशाल पैदल मार्च करते हुए राजभवन एवं मुख्यमंत्री निवास रायपुर पहुंचकर अपनी 5 सूत्रीय मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपेंगे।

बैगलेस डे पर किताबों के बोझ से दूर बच्चों ने जानी शूरवीरों की गाथा

*** प्रा. शाला भुईयांपारा में भूतपूर्व सैनिकों ने बच्चों को दिए सेना में जाने के टिप्स, बच्चों ने कहा समय आया तो नहीं छोड़ेंगे मौका**

प्रतापपुर/द शूटर/ 1 अगस्त 2026 विकास खंड प्रतापपुर के भुईयां पारा (ग्राम पंचायत सरहरी) स्थित शासकीय शाला में शनिवार, 1 अगस्त को 'बैगलेस डे' (बस्ते के बोझ से मुक्त दिन) का आयोजन पूरे उत्साह और राष्ट्रप्रेम की भावना के साथ सम्पन्न हुआ। इस विशेष अवसर पर बच्चों ने बस्ते और किताबों से दूर रहकर देश के शूरवीरों, सेना के योगदान और राष्ट्रीय गौरव के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त कीं।

कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती की वंदना, राष्ट्रगान एवं राज्य गीत के सस्वर गायन के साथ हुआ। तत्पश्चात, स्वतंत्रता सेनानियों के चित्रों पर पुष्प, धूपबत्ती एवं तिलक लगाकर उन्हें नमन किया गया।

कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित भूतपूर्व सैनिकों ओंकारनाथ तिवारी और शिवचरण नापित का शाला परिवार द्वारा आत्मीय स्वागत किया गया। भूतपूर्व सैनिकों ने भारतीय सेना में बिताए अपने गौरवशाली अनुभव और देशभक्ति के प्रेरक प्रसंग बच्चों के साथ साझा किए, देश भक्ति की बातों से बच्चों में उत्साह देखा गया।

भूतपूर्व सैनिक ओंकारनाथ तिवारी ने बच्चों को बताया कि देश की रक्षा करने वाली सेना के कितने अंग होते हैं । सेना के तीनों अंगों के कार्य एवं देश के प्रति समर्पण को स्पष्ट करते हुए बच्चों को भी अपने जीवन में सेना की तरह अनुशासन समझाते हुए बच्चों को अनुशासन के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में भूतपूर्व सैनिक श शिवचरण नापित ने भी बच्चों को नियमित रूप से स्कूल आने के साथ-साथ खेलकूद और शारीरिक व्यायाम पर विशेष ध्यान देने की सलाह दी ताकि वे शारीरिक रूप से मजबूत बन सकें। साथ ही उन्होंने सेना में जाने के राय पर बच्चों ने एक साथ सहमति जताई।

इस 'बैगलेस डे' के अवसर पर बच्चों के लिए चित्रकला, कविता पाठ और निबंध लेखन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। जिसमें नन्हे-मुन्ने बच्चों ने अपनी कलात्मक कल्पना और शब्दों के माध्यम से स्वतंत्रता सेनानियों एवं वीर जवानों को याद किया और अपनी प्रतिभा का बेहतरीन प्रदर्शन किया।

इस अवसर पर प्रधान पाठक सुरेंद्र कुमार मिश्रा और सहायक शिक्षक जयंत कुमार पाठक के साथ अविभावक गण तथा ग्रामीण भी उपस्थित रहें। कार्यक्रम के अंत में बच्चों और उपस्थित लोगों को मिष्ठान का वितरण किया गया।

रामानुजनगर की सेहत को मिली नई उम्मीद, ढाई करोड़ रुपये से बनेगा आधुनिक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भवन

सूरजपुर, 01 अगस्त 2026 द शूटर। गांव के किसी परिवार में जब कोई अचानक बीमार पड़ता है तो सबसे बड़ी चिंता इलाज की नहीं, बल्कि इलाज तक पहुंचने की होती है। कई बार बेहतर स्वास्थ्य सुविधा के अभाव में लोगों को लंबी दूरी तय करनी पड़ती है। रामानुजनगर और आसपास के ग्रामीणों की यह परेशानी अब काफी हद तक कम होने की उम्मीद है। क्षेत्र को जल्द ही एक नए और सर्वसुविधायुक्त सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भवन की सौगात मिलने जा रही है।छत्तीसगढ़ शासन के लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग ने रामानुजनगर में नए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भवन के निर्माण के लिए 2 करोड़ 50 लाख रुपये की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान कर दी है। यह राशि वित्तीय वर्ष 2026-27 के बजट प्रावधान के तहत स्वीकृत की गई है। नए भवन के निर्माण से क्षेत्र के हजारों ग्रामीणों को गुणवत्तापूर्ण और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं अपने ही इलाके में उपलब्ध हो सकेंगी।

रामानुजनगर में लंबे समय से अस्पताल के बेहतर भवन और आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाओं की जरूरत महसूस की जा रही थी। मरीजों और उनके परिजनों को कई बार गंभीर स्थिति में बड़े अस्पतालों का रुख करना पड़ता था। इस आवश्यकता को देखते हुए प्रेमनगर विधायक भूलन सिंह मरावी ने लगातार शासन स्तर पर प्रयास किए। आखिरकार उनके प्रयास रंग लाए और अस्पताल भवन के लिए ढाई करोड़ रुपये की मंजूरी मिल गई।प्रस्तावित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भवन आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित होगा। यहां बेहतर उपचार व्यवस्था, जांच की उन्नत सुविधाएं, मरीजों के लिए अधिक व्यवस्थित वार्ड और स्वास्थ्य सेवाओं के लिए आवश्यक आधारभूत संसाधन विकसित किए जाएंगे। इससे रामानुजनगर के साथ-साथ आसपास की कई ग्राम पंचायतों के लोगों को भी सीधा लाभ मिलेगा और इलाज के लिए दूर-दराज के अस्पतालों पर निर्भरता कम होगी।

अस्पताल भवन की स्वीकृति की खबर मिलते ही क्षेत्र में खुशी का माहौल है। जनप्रतिनिधियों, सामाजिक संगठनों और स्थानीय नागरिकों ने इसे ग्रामीण स्वास्थ्य व्यवस्था को मजबूत करने वाला महत्वपूर्ण निर्णय बताया है। लोगों का मानना है कि यह केवल एक भवन का निर्माण नहीं, बल्कि हजारों परिवारों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं से जोड़ने की दिशा में एक मजबूत पहल है।विधायक भूलन सिंह मरावी ने कहा कि जनता को बेहतर, सुलभ और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि नया सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भवन बनने के बाद क्षेत्र के लोगों को इलाज के लिए अनावश्यक परेशानियों का

हिन्दी दैनिक
द शूटर

कनकनगर के सरकारी स्कूल में धूमधाम से मनाया गया बच्चों का सामूहिक जन्मोत्सव

*** प्रधानपाठक की पहल पर प्रतापपुर ब्लॉक के इस स्कूल में हर महीने आयोजित होता है आयोजन**

प्रतापपुर/द शूटर। प्रतापपुर ब्लॉक के एक सरकारी स्कूल में प्रधानपाठक सचिन जायसवाल की पहल पर हर महीने बच्चों का सामूहिक जन्मोत्सव मनाया जाता है। शनिवार को जुलाई माह में जन्म लेने वाले बच्चों का जन्म दिन धूमधाम से मनाया गया,केक काटने के बाद न्योता भोज परोसा गया।

माध्यमिक शाला के प्रधानपाठक सचिन जायसवाल ने यहां अपनी पदस्थापना के बाद सामूहिक जन्मोत्सव मनाने की परंपरा शुरू की थी जिसमें सभी शिक्षकों का सहयोग मिलता है।शनिवार को एक और आयोजन संपन्न हुआ जिसमें उन बच्चों का जन्म दिन धूमधाम से मनाया गया जिनका जन्म जुलाई के महीने में हुआ है, इनमें शिवा, शिवम, विजेंद्र, अनुष्का, प्रिंस कुमार, भागीरथी, संजय, रती, अनन्या, राजकुमार, नंदिनी, करिश्मा, ज्योति, रेशमा, पुष्पा शामिल हैं।इसके लिए एक क्लासरूम की साज सजावट की गई थी,बच्चों को तिलक लगाया गया फिर सभी ने एक साथ केक काटा।उपस्थित अन्य बच्चों एक साथ अधिकारी कर्मचारियों,ग्रामीणों और शिक्षकों ने उन्हें शुभकामनाएं दीं।इसके बाद न्योता भोज का आयोजन भी किया गया।जानकारी देते हुए सचिन जायसवाल ने बताया कि गांव के बच्चे भी चाहते हैं कि उनका हर जन्मदिन यादगार हो और धूमधाम के साथ मनाया जाए।यही सोचकर सभी शिक्षकों के सहयोग से सात साल पहले इसकी शुरूवात हुई थी।आयोजन को लेकर बच्चों में उत्साह होता है और वे स्कूल में अपने सहपाठियों,अभिभावकों और शिक्षकों की उपस्थिति में जन्म दिन मनाते हैं।इसका आयोजन हर महीने होता है और उस महीने जिनका जन्म दिन होता है,सभी इसमें शामिल होते हैं।इसके पीछे सोच यह भी थी कि ग्रामीण बच्चे सरकारी स्कूल के प्रति आकर्षित होंगे।इसका लाभ देखने को भी मिला है और हमारे स्कूल में काफी दर्ज संख्या है।बच्चों की खुशी में बीईओ प्रतापपुर एमएस धुर्वे,सामाजिक कार्यकर्ता अनिल मित्तल, कैराडांड के प्रधानपाठक भूपेश तिवारी,सामाजिक कार्यकर्ता संजीव पांडे,राकेश मित्तल,जिशान खान सहित महिला बाल विकास विभाग से सुपरवाइजर विभा साहू, प्रधानपाठक सचिन कुमार जायसवाल शिक्षक बीरेंद्र कुमार जायसवाल, खगेश्वर प्रसाद रात्रे, सुदीप्ति मिंज, बालेश्वर राम, प्राशा के प्रधानपाठक मनीलाल बेक शिक्षक कमलेश कुमार जायसवाल प्रफुलित एक्का आंगनबाड़ी कार्यकर्ता अनीता सिंह सहायिका सुहानों रसोईया घूरन, श्रवण, बिराजो, जुकमेन, अंशकालीन सफाईकर्मी लखन सिंह, विजय सिंह लॉरेंस सहित अन्य उपस्थित थे।

बच्चों को स्कूल से जोड़ने के साथ उन्हें खुशियां देने अच्छा प्रयास - बीईओ

सामूहिक जन्मोत्सव की सराहना करते हुए बीईओ एमएस धुर्वे ने कहा कि यह सोच और आयोजन सराहनीय पहल है।यहां के प्रधानपाठक सचिन जायसवाल और सभी शिक्षक बधाई के पात्र हैं।इस तरह का आयोजन कर वे बच्चों को खुशियां तो देते ही हैं,सरकारी स्कूलों के प्रति रुझान बढ़ाने के उद्देश्य से भी अच्छी पहल है।आज उन्हें भी इसमें शामिल होने का मौका मिला,उनके लिए यह यादगार पल बन गया है।

छोटे पांव मजबूत कदम ने कॉपियों का किया वितरण..

इस दौरान प्रतापपुर की समाजिक संस्था छोटे पांव मजबूत कदम ने यहां के तीन स्कूलों के प्राथमिक और माध्यमिक शालाओं के बच्चों को कॉपियों का वितरण किया।संस्था के अनिल मित्तल और राकेश मित्तल ने बताया कि यह वितरण गोयल टीएमएटी के सहयोग से हुआ है। कंपनी द्वारा संस्था को दस हजार कॉपियों दी गई हैं और अब तक एक हजार से ज्यादा बच्चों को इनका वितरण हो चुका है।

वरिष्ठों के चेहरे पर लौटी मुस्कान, मानसिक स्वास्थ्य शिविर बना उम्मीद की नई किरण

सूरजपुर, 01 अगस्त 2026 द शूटर। उम्र के पड़ाव पर जब कई बुजुर्ग अपनों से दूर अकेलेपन, अवसाद और मानसिक तनाव से जूझते हैं, तब किसी का हाल पूछ लेना भी उनके लिए बड़ी राहत बन जाता है। ऐसे ही संवेदनशील प्रयास की मिसाल सूरजपुर स्थित छत्तीसगढ़ शबरी सेवा संस्थान (वृद्धाश्रम) में देखने को मिली, जहां राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (एनएमएचपी) के तहत आयोजित विशेष शिविर ने वरिष्ठ नागरिकों के चेहरों पर सुकून और आत्मविश्वास की मुस्कान लौटाने का काम किया। छत्तीसगढ़ शासन की पहल पर आयोजित इस शिविर में बुजुर्गों को निःशुल्क मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण, विशेषज्ञ परामर्श, उपचार और आवश्यक दवाइयों की सुविधा उपलब्ध कराई गई। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. के.डी. पैकरा के निर्देशन तथा एनएमएचपी के नोडल अधिकारी डॉ. राजेश पैकरा एवं जिला कार्यक्रम प्रबंधक संदीप नामदेव के मार्गदर्शन में आयोजित शिविर में मनोरोग विशेषज्ञ डॉ. अंकित शर्मा, क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट सचिन मातुरकर और सीनियर नर्सिंग ऑफिसर नंदकिशोर वर्मा ने वरिष्ठ नागरिकों का मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण कर उनकी समस्याओं को गंभीरता से सुना। शिविर के दौरान अवसाद, चिंता, तनाव, अनिद्रा, भूलने की बीमारी (डिमेंशिया) और स्वस्थ वृद्धावस्था जैसे विषयों पर विस्तार से जानकारी दी गई। विशेषज्ञों ने प्रत्येक बुजुर्ग से व्यक्तिगत बातचीत कर उनकी भावनात्मक स्थिति को समझा और उन्हें सकारात्मक सोच, नियमित दिनचर्या, सामाजिक जुड़ाव तथा सक्रिय जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया। जिन वरिष्ठ नागरिकों को उपचार की आवश्यकता थी, उन्हें मौके पर ही आवश्यक दवाइयां वितरित की गईं। साथ ही नियमित फॉलो-अप और आगे की चिकित्सा संबंधी परामर्श भी दिया गया, ताकि उनकी मानसिक सेहत का लगातार ध्यान रखा जा सके। शिविर के बाद वृद्धाश्रम में रहने वाले कई बुजुर्गों ने कहा कि किसी ने उनकी मानसिक पीड़ा को समझने और धैर्यपूर्वक सुनने का प्रयास किया, यही उनके लिए सबसे बड़ी राहत रही। उन्होंने इस पहल को अपने लिए भावनात्मक संबल बताया। वहीं वृद्धाश्रम प्रबंधन ने जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम की पूरी टीम के प्रति आभार व्यक्त करते हुए ऐसे शिविरों के नियमित आयोजन की आवश्यकता भी जताई। कुलमिलाकर यह पहल केवल इलाज तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह संदेश भी दे गई कि स्वस्थ समाज वही है, जहां बुजुर्गों के तन के साथ उनके मन की सेहत का भी समान रूप से सम्मान और संरक्षण किया जाए।

बैगलेस डे पर बच्चों ने चित्रों में उकेरा देशभक्ति का रंग, शहीदों को दी भावभीनी श्रद्धांजलि

सूरजपुर, 01 अगस्त 2026 द शूटर। स्कूल सिर्फ पढ़ाई की जगह नहीं, बल्कि संस्कारों की पाठशाला भी हैं। इसी भावना के साथ जिले के सभी प्राथमिक, माध्यमिक और हाईस्कूलों में शनिवार को बैगलेस डे के अवसर पर महापुरुषों, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों और वीर शहीदों की चित्र प्रदर्शनी आयोजित की गई। बच्चों ने अपनी बनाई पेंटिंग और चित्रकारी के माध्यम से देश के अमर बलिदानियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए राष्ट्रभक्ति और एकता का संदेश दिया।

कार्यक्रम में कई विद्यालयों में शहीद परिवारों के सदस्य, भूतपूर्व सैनिक, समाजसेवी और विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिष्ठित लोग शामिल हुए। उन्होंने विद्यार्थियों से संवाद कर स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरक गाथाएं साझा कीं और देश सेवा के मूल्यों को अपनाने का संदेश दिया। चित्रकला प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। साथ ही पोषण वाटिका, न्योता भोजन और अन्य रचनात्मक गतिविधियों का भी आयोजन हुआ।शिक्षा विभाग ने बताया कि प्रत्येक शनिवार आयोजित होने वाला बैगलेस डे विद्यार्थियों की रचनात्मकता को निखारने के साथ समाज और विद्यालय के बीच मजबूत सहभागिता स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

60 सीटें तैयार, लेकिन दाखिले पर लगा इंतजार का ताला, पैरामेडिकल कोर्स शुरू होने से पहले ही छात्रों की बढ़ी बेचैनी

अम्बिकापुर, 01 अगस्त 2026 द शूटर। किसी ने बारहवीं के बाद लैब टेक्नीशियन बनने का सपना देखा है, तो कोई रेडियोलॉजी या एनेस्थीसिया के क्षेत्र में अपना भविष्य तलाशना चाहता है। लेकिन इन सपनों और हकीकत के बीच इस समय सबसे बड़ी बाधा बनी हुई है पैरामेडिकल पाठ्यक्रमों की अटकी हुई प्रवेश प्रक्रिया। नया शैक्षणिक सत्र शुरू हो चुका है, मगर मेडिकल कॉलेज अम्बिकापुर में प्रस्तावित पैरामेडिकल कोर्सों में अब तक दाखिले शुरू नहीं हो पाए हैं। ऐसे में छात्र-छात्राओं की चिंता हर दिन बढ़ती जा रही है कि कहीं इंतजार ही उनके पूरे एक साल पर भारी न पड़ जाए। दरअसल, मेडिकल कॉलेज अम्बिकापुर में शैक्षणिक सत्र 2026-27 से छह नए पैरामेडिकल पाठ्यक्रम शुरू किए जाने हैं। बायोकेमिस्ट्री, पैथोलॉजी, माइक्रोबायोलॉजी, रेडियोलॉजी, एनेस्थीसिया और नेत्र रोग विभाग में 10-10 सीटों के हिसाब से कुल 60 सीटों पर प्रवेश प्रस्तावित है। जीव विज्ञान विषय से 12वीं उत्तीर्ण विद्यार्थियों के लिए यह सुनहरा अवसर माना जा रहा था, क्योंकि अब तक ऐसे कोर्सों के लिए उन्हें दूसरे शहरों का रुख करना पड़ता था।हालांकि सत्र शुरू होने के बाद भी प्रवेश प्रक्रिया का इंतजार खत्म नहीं हुआ है। यही वजह है कि विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों की चिंता बढ़ गई है। उन्हें डर है कि यदि जल्द निर्णय नहीं लिया गया तो दाखिले में होने वाली देरी उनकी पढ़ाई को प्रभावित कर सकती है और पूरा शैक्षणिक सत्र भी संकट में पड़ सकता है।

मामले को गंभीरता से उठाते हुए नगर निगम अम्बिकापुर के नेता प्रतिपक्ष शफी अहमद ने कलेक्टर अजीत वसंत से मुलाकात कर विद्यार्थियों के हित में शीघ्र पहल करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि प्रवेश प्रक्रिया में हो रही देरी का सीधा नुकसान उन युवाओं को होगा, जो मेडिकल क्षेत्र में करियर बनाने की तैयारी कर रहे हैं। इसलिए आवश्यक है कि प्रक्रिया बिना और विलंब के शुरू कराई जाए।

कलेक्टर अजीत वसंत ने इस पर सकारात्मक रुख अपनाते हुए मेडिकल कॉलेज के डीन को आवश्यक दस्तावेजों के साथ सोमवार को बुलाने की बात कही है। उनका कहना है कि सभी तथ्यों और दस्तावेजों की समीक्षा के बाद विद्यार्थियों के हित में उचित कदम उठाए जाएंगे। वहीं मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. अविनाश मेश्राम ने बताया कि आयुष विश्वविद्यालय की ओर से अभी तक प्रवेश संबंधी नियम एवं शर्तें जारी नहीं की गई हैं। जब तक विश्वविद्यालय से आवश्यक दिशा-निर्देश प्राप्त नहीं होंगे, तब तक कॉलेज स्तर पर प्रवेश प्रक्रिया शुरू करना संभव नहीं है।गौरतलब है कि 10 जून 2026 को मेडिकल कॉलेज प्रशासन ने इसी सत्र से पैरामेडिकल पाठ्यक्रम शुरू होने की जानकारी दी थी। उस घोषणा के बाद क्षेत्र के अनेक विद्यार्थियों में नई उम्मीद जगी थी कि अब उन्हें चिकित्सा क्षेत्र में रोजगारपरक शिक्षा के लिए दूर नहीं जाना पड़ेगा। लेकिन समय बीतने के साथ वही उम्मीद अब चिंता में बदलती दिखाई दे रही है। अब सोमवार को प्रस्तावित कलेक्टर और डीन की बैठक पर विद्यार्थियों की निगाहें टिकी हैं। उम्मीद की जा रही है कि इस बैठक के बाद प्रवेश प्रक्रिया को लेकर कोई स्पष्ट निर्णय सामने आएगा। क्योंकि हर गुजरते दिन के साथ सिर्फ तारीखें नहीं बदल रहीं, बल्कि उन युवाओं की बेचैनी भी बढ़ रही है, जो अपने सपनों को उड़ान देने के लिए कॉलेज का दरवाजा खुलने का इंतजार कर रहे हैं।

स्वच्छ सूरजपुर की ओर एक और मजबूत कदम, 58 ग्राम पंचायतों में शुरू हुआ ठोस अपशिष्ट प्रबंधन अभियान

*** अब हर घर में चार रंग के डस्टबिन से होगी कचरे की अलग-अलग पहचान, स्वच्छता बनेगी जीवनशैली**

सूरजपुर, 01 अगस्त 2026, द शूटर। सुबह की ताजी हवा, साफ-सुथरी गलियां और कचरे से मुक्त गांव... यह किसी कल्पना का दृश्य नहीं, बल्कि सूरजपुर जिले में शुरू हुई एक नई पहल का लक्ष्य है। प्रशासन चाहता है कि स्वच्छता केवल सरकारी अभियान बनकर न रह जाए, बल्कि हर घर की आदत और हर नागरिक की जिम्मेदारी बने। इसी सोच के साथ जिले में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम-2026 के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए व्यापक जनजागरूकता अभियान शुरू किया गया है। कलेक्टर श्रीमती रेना जमील के निर्देशन और जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी विजेंद्र सिंह पाटले के मार्गदर्शन में स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) तथा पंचायत विभाग की टीमें गांव-गांव पहुंच रही हैं। अभियान के पहले चरण में जिले की 58 ग्राम पंचायतों को शामिल किया गया है। यहां स्वच्छता दीदियां और पंचायत सचिव घर-घर जाकर लोगों को समझा रहे हैं कि यदि कचरे को घर से ही अलग-अलग रखा जाए तो न केवल गांव साफ रहेंगे, बल्कि पर्यावरण को भी बड़ा लाभ मिलेगा।अभियान के तहत हर परिवार को चार रंग के डस्टबिन के उपयोग की जानकारी दी जा रही है। नीले डस्टबिन में कागज, प्लास्टिक, कांच, कपड़ा और धातु जैसे सूखे कचरे को रखा जाएगा। हरे डस्टबिन में सब्जियों और फलों के छिलके, बचा हुआ भोजन, चायपत्ती तथा अन्य जैविक कचरा डाला जाएगा। लाल डस्टबिन सेनेटरी पैड, डायपर, मास्क, बैंडेज और सुई जैसे सेनेटरी अपशिष्ट के लिए निर्धारित है, जबकि काले डस्टबिन में बैटरी, बल्ब, पेंट, कीटनाशक और एक्सपायरी दवाइयों जैसे विशेष अपशिष्ट एकत्र किए जाएंगे। मुख्य कार्यपालन अधिकारी विजेंद्र सिंह पाटले ने बताया कि यह अभियान तभी सफल होगा जब हर परिवार अपनी जिम्मेदारी समझे। इसी उद्देश्य से गांवों में लगातार जागरूकता कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। स्कूलों में गठित क्लब भी बच्चों के माध्यम से स्वच्छता और कचरा पृथक्करण का संदेश घर-घर पहुंचाएंगे। उन्होंने स्पष्ट किया कि नियमों की अनदेखी कर मिश्रित कचरा देने वाले परिवारों के खिलाफ ग्राम पंचायतों द्वारा नियमानुसार जुमार्ने की कार्रवाई भी की जाएगी। दरअसल, यह पहल केवल डस्टबिन बांटने या कचरा उठाने तक सीमित नहीं है। यह लोगों की सोच बदलने का अभियान है। जब हर व्यक्ति अपने घर से ही कचरे को सही तरीके से अलग करना शुरू करेगा, तब गांवों में गंदगी कम होगी, बीमारियों का खतरा घटेगा और प्रकृति भी सुरक्षित रहेगी। स्वच्छ सूरजपुर का सपना किसी एक विभाग या प्रशासन के भरोसे पूरा नहीं हो सकता। इसके लिए हर परिवार, हर बच्चे और हर नागरिक को अपनी भूमिका निभानी होगी। क्योंकि स्वच्छता की असली शुरूआत घर के दरवाजे से होती है, और वहीं से एक सुंदर, स्वस्थ और पर्यावरण अनुकूल समाज की नींव रखी जाती है।

बैगलेस डे पर महानायक दर्शन, तस्वीरों के जरिए बच्चों ने सीखा राष्ट्र निर्माण का पाठ

*** चित्रों के माध्यम से नन्हें विद्यार्थियों ने जाना स्वतंत्रता, त्याग और राष्ट्र निर्माण का स्वर्णिम इतिहास**

सूरजपुर/द शूटर। कलेक्टर रेना जमील के निर्देशानुसार आयोजित बैगलेस डे के अवसर पर शासकीय प्राथमिक शाला चट्टीडांड़ में महानायकों की प्रेरणा प्रदर्शनी ने विद्यालय को प्रेरणा, ज्ञान और राष्ट्रभक्ति के केंद्र में बदल दिया। विद्यालय परिसर में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, महान समाज सुधारकों, वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों एवं राष्ट्रनिर्माताओं के आकर्षक चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई, जिसने बच्चों को किताबों से बाहर निकलकर भारत के गौरवशाली इतिहास से सीधे जुड़ने का अवसर प्रदान किया।

प्रदर्शनी की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि प्रत्येक चित्र अपने आप में संघर्ष, साहस, त्याग और राष्ट्रसेवा की जीवंत कहानी बन गया। प्रधान पाठक गौतम शर्मा ने संवादात्मक एवं रोचक शैली में विद्यार्थियों को महापुरुषों के जीवन प्रसंग सुनाए। बच्चों ने महात्मा गांधी, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, स्वामी विवेकानंद, डॉ. भीमराव अंबेडकर, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर, बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय और पिंगली वेंकैया सहित अनेक महान विभूतियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रेरणा प्राप्त की।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण पहचानो महानायक गतिविधि रही, जिसमें बच्चों ने चित्रों की पहचान कर उनके योगदान पर चर्चा की तथा राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका को समझा। इस गतिविधि ने विद्यार्थियों में देशभक्ति, नेतृत्व, नैतिकता, सामाजिक समरसता, अनुशासन और संवैधानिक मूल्यों के प्रति नई जागरूकता पैदा की। पूरे आयोजन के दौरान विद्यालय का वातावरण जिज्ञासा, सीखने की उत्सुकता और राष्ट्रगौरव की भावना से सराबोर रहा। प्रदर्शनी का अवलोकन करने पहुंचे अभिभावकों एवं ग्रामीणों ने इस नवाचारी पहल की सराहना करते हुए कहा कि ऐसी गतिविधियाँ बच्चों को केवल सामान्य ज्ञान ही नहीं देतीं, बल्कि उन्हें अपने देश के महान इतिहास, संस्कृति और आदर्श व्यक्तित्वों से भावनात्मक रूप से भी जोड़ती हैं। उनका मानना था कि इस प्रकार का गतिविधि आधारित शिक्षण बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कार्यक्रम के सफल संचालन में विद्यालय की शिक्षिका श्रीमती मंजू कुजूर का विशेष एवं सराहनीय योगदान रहा।

राष्ट्रवाद की रक्षाः भारत और जापान, इंदिरा और मोदी

राष्ट्रवाद की रक्षा नई दिल्लीः संसद के मॉनसून सत्र में, बीजेपी सरकार ने 'राष्ट्रीय सम्मान के अपमान की रोकथाम (संशोधन) विधेयक' पारित किया। इस विधेयक का मुख्य उद्देश्य भारत के राष्ट्रीय गीत, 'वंदे मातरम' को वही कानूनी दर्जा और सुरक्षा देना है जो अभी राष्ट्रीय गान (जन गण मन), राष्ट्रीय ध्वज और संविधान को प्राप्त है। राष्ट्रवाद की रक्षाः 1971 में इंदिरा, 2026 में मोदी 1971 में इंदिरा गांधी की सरकार द्वारा पारित 'राष्ट्रीय सम्मान के अपमान की रोकथाम अधिनियम' के तहत, राष्ट्रीय गान का जानबूझकर अपमान करना, उसे गाने से रोकना या गाते समय बाधा डालना आपराधिक अपराध माना जाता है। बीजेपी सरकार इस अधिनियम में संशोधन कर रही है ताकि राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' का अपमान करने वालों पर भी वही सजा लागू हो सके। यदि यह विधेयक पारित हो जाता है, तो 'वंदे मातरम' के गायन में जानबूझकर बाधा डालने या उसका अपमान करने वाले व्यक्तियों को तीन साल तक की जेल, जुर्माना या दोनों हो सकते हैं। 2026 की शुरुआत में, गृह मंत्रालय के दिशानिर्देशों में सरकारी कार्यक्रमों में 'वंदे मातरम' को पूरा गाने का आदेश दिया गया था, जिसमें यह भी कहा गया था कि राष्ट्रीय गीत को राष्ट्रीय गान से पहले गाया जाना चाहिए। जब सुप्रीम कोर्ट में इसे चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई हुई, तो उसे इस आधार पर खारिज कर दिया गया कि ये केवल दिशानिर्देश थे और इनका पालन न करने पर कोई कानूनी सजा का प्रावधान नहीं था। इसी पृष्ठभूमि में, मोदी सरकार का नया विधेयक इंदिरा के 1971 के अधिनियम में संशोधन करता है, जिससे कुछ स्थितियों में 'वंदे मातरम' का गायन अनिवार्य हो जाता है और इसका अपमान करना अपराध की श्रेणी में आ जाता है। जो तथाकथित बुद्धिजीवी यह पूछते हैं कि इतने वर्षों बाद 'वंदे मातरम' की रक्षा के लिए यह कदम क्यों उठाया जा रहा है?, उन्हें वही जवाब दिया जा सकता है जो इंदिरा गांधी ने आजादी के 24 साल बाद राष्ट्रीय गान और ध्वज की रक्षा के लिए 1971 का अधिनियम लाते समय दिया था। ऐसे संदेह करने वालों को जवाब देना हमारा कर्तव्य है। 17 जुलाई झ जापान, 30 जुलाई झ भारत 17 जुलाई 2026 को, जापान की संसद (डाइट) ने एक कानून पारित किया जिसके तहत उनके राष्ट्रीय ध्वज 'हिनोमारू' का अपमान करना अपराध माना जाएगा। जापानी कानून के अनुसार, सार्वजनिक रूप से झंडे को जलाना, फाड़ना, उस पर पैर रखना या उस पर कीचड़ फेंकना–और ऐसी हरकतों का प्रसारण करना–ऐसे काम हैं जिनसे लोगों को परेशानी या घृणा होती है और ये दंडनीय अपराध हैं। नया कानून दोषियों के लिए दो साल तक की जेल और 200,000 येन (लगभग 1.4 लाख रुपये) का जुर्माना लगाता है। जापान ने 17 जुलाई को अपने झंडे की सुरक्षा के लिए कदम उठाया; भारत ने 21 जुलाई को अपने राष्ट्रीय गीत की सुरक्षा के लिए कदम उठाया और 30 जुलाई को इसे पारित किया। दोनों देशों को अचानक इन कानूनों की आवश्यकता क्यों पड़ी? कम्युनिकेशन गैप की पड़ताल जापान 1300 साल बाद, भारत 75 साल बाद जापानी लोगों द्वारा सम्मानित पारंपरिक राष्ट्रीय ध्वज की उत्पत्ति 1300 साल पहले हुई थी। समय के साथ इसमें बदलाव आया और 1854 में इसने अपना वर्तमान 'हिनोमारू' रूप ले लिया। हालांकि सभी जापानी लोगों ने इसे अपने राष्ट्रीय ध्वज के रूप में स्वीकार किया था, लेकिन इसे आधिकारिक तौर पर कानून का दर्जा 1999 में ही मिला। चूंकि लोग स्वाभाविक रूप से इसका सम्मान करते थे, इसलिए जापान को इसे आधिकारिक तौर पर राष्ट्रीय ध्वज घोषित करने वाला कानून पारित करने की आवश्यकता कभी महसूस नहीं हुई। हालांकि, जब जापान में ऐसे गलत सोच वाले लोग सामने आए जो यह सवाल उठाने लगे कि क्या यह वास्तव में राष्ट्रीय ध्वज है, तो सरकार को इसकी स्थिति को लेकर कानून बनाने के लिए मजबूर होना पड़ा।

महंगे रक्षा सौदे, देरी और निर्भरताः भारत के डिफेंस सेक्टर की अंदरूनी चुनौतियां

हथियार खरीद प्रक्रिया में मौजूद गंभीर चुनौतियों पर एक नजर दो दशकों से ज्यादा समय से, भारत की डिफेंस ऑफसेट पॉलिसी का मकसद घरेलू डिफेंस मैन्युफैक्चरिंग को मजबूत करना, अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी को लाना और विदेशी सप्लायर्स पर निर्भरता कम करना रहा है। इसका कॉन्सेप्ट सीधा थाः अगर भारत मिलिट्री हार्डवेयर के आयात पर अरबों डॉलर खर्च करता है, तो उस खर्च का कुछ हिस्सा निवेश, टेक्नोलॉजी ट्रांसफर, स्थानीय उत्पादन, रिसर्च पार्टनरशिप और औद्योगिक विकास के जरिए देश में वापस आना चाहिए। असल में, यह पॉलिसी अच्छी नीयत से बनाई गई थी, जिसे उन विकासशील देशों को ध्यान में रखकर बनाया गया था जो विकसित देशों से मिलिट्री उपकरण खरीदते समय अपना मिलिट्री टेक्नोलॉजी बेस बनाने की कोशिश कर रहे थे। भारत और जापान, इंदिरा और मोदी हालांकि, ऐसा लगता है कि भारत में यह कभी काम नहीं आया। मुझे तत्कालीन डिफेंस सेक्रेटरी अजय कुमार के साथ हुई अपनी बातचीत भी याद है; उन्होंने समस्या को समझा और मुझसे कहाः ₹ऑफसेट पॉलिसी से छुटकारा पाने की योजना बनाओ; इससे ज्यादा फायदा नहीं होता।₹ ऐसा नहीं है कि इस पॉलिसी से कोई फायदा नहीं हुआ। बड़े डिफेंस कॉन्ट्रैक्ट्स ने भारतीय कंपनियों के लिए काफी बिजनेस पैदा किया, प्राइवेट सेक्टर का विस्तार किया और कई टरटए को ग्लोबल एयरोस्पेस और डिफेंस मैन्युफैक्चरर्स के लिए सप्लायर बनने में मदद की। आज कई भारतीय कंपनियां अंतरराष्ट्रीय डिफेंस कंपनियों के लिए पार्ट्स बनाती हैं - यह नतीजा ऑफसेट शर्तों के बिना मुश्किल होता। फिर भी, इन उपलब्धियों के बावजूद, यह पॉलिसी अपने मूल रणनीतिक लक्ष्यों को हासिल करने में काफी पीछे रह गई है। भारत अत्याधुनिक मिलिट्री टेक्नोलॉजी और जरूरी पार्ट्स के लिए आयात पर बहुत ज्यादा निर्भर है। ऑफसेट का इस्तेमाल करके टेक्नोलॉजी के मामले में आत्मनिर्भरता हासिल करने का देश का सपना अभी भी आंशिक रूप से ही पूरा हुआ है। ने ₹डिफेंस ऑफसेट के मैनेजमेंट₹ पर अपनी 50वीं रिपोर्ट में - जिसे 4 जून को अपनाया गया और इस महीने संसद में पेश किया गया - इस प्रोग्राम की कमियों का शायद सबसे विस्तृत आकलन पेश किया है। रिपोर्ट साफ करती है कि समस्या वेंडर की शर्तों में देरी से कहीं ज्यादा बड़ी है। यह प्लानिंग, प्रोजेक्ट के मूल्यांकन, टेक्नोलॉजी के चयन और कॉन्ट्रैक्ट मैनेजमेंट में गहरी संरचनात्मक कमियों को उजागर करती है। अ'रङ्ग र्फ़ी - छात्र विरोध से बदली सियासत, अअढ और विपक्षी दलों के बीच मतभेद हुए उजागर बड़ी पेंडिंग शर्तें सबसे बड़ी और तुरंत चिंता की बात लागू करने की रफ़्तार है। चल रहे 26 ऑफसेट कॉन्ट्रैक्ट्स में, कुल ऑफसेट शर्त लगभग 9.92 बिलियन अमेरिकी डॉलर की है। हालांकि, वेंडर्स ने केवल 5.47 बिलियन अमेरिकी डॉलर के दावे जमा किए हैं, जो कुल शर्त का सिर्फ 55.14% है। लगभग 4.45 बिलियन अमेरिकी डॉलर, या 44.86%, अभी भी जमा नहीं किए गए हैं। इतनी बड़ी पेंडिंग शर्त इसके अमल और निगरानी को लेकर गंभीर सवाल खड़े करती है। हालांकि देरी के लिए अक्सर वेंडर को ज़िम्मेदार ठहराया जाता है, लेकिन ढअढ ने सही कहा है कि रक्षा मंत्रालय की भी इसमें ज़िम्मेदारी है। कॉन्ट्रैक्ट की बातचीत के दौरान मंजूर किए गए कई प्रोजेक्ट बाद में कमर्शियल या टेक्निकल तौर पर बेकार साबित हुए। इससे पता चलता है कि समस्या सिर्फ वेंडर के नियमों का पालन न करने की नहीं है, बल्कि प्रोजेक्ट के मूल्यांकन, पार्टनर चुनने और कॉन्ट्रैक्ट के बाद की निगरानी में भी कमियां थीं। इसलिए, यह जरूरी है कि रक्षा मंत्रालय के एक्सपर्ट अब टेक्नोलॉजी और कमर्शियल पहलुओं को अलग-अलग और साफ तौर पर देखें, साथ ही भारत में वेंडर की लंबे समय की प्रतिबद्धता पर भी ध्यान दें। पूरा होने का मतलब सफलता नहीं है मंत्रालय ने पिछले कुछ सालों में 56 ऑफसेट कॉन्ट्रैक्ट साइन किए हैं। इनमें से सिर्फ 20 कॉन्ट्रैक्ट (लगभग 35.7%) ही पूरी तरह से पूरे, ऑडिट और बंद किए गए हैं। 10 और कॉन्ट्रैक्ट का फाइनल ऑडिट चल रहा है, जबकि 26 कॉन्ट्रैक्ट (जो पूरे प्रोग्राम का लगभग आधा हिस्सा हैं) अभी भी चल रहे हैं। सिर्फ कॉन्ट्रैक्ट की अवधि पूरी होने को सफलता नहीं माना जा सकता। ऑफसेट दायित्वों को तभी पूरा माना जाना चाहिए जब ऑडिटर यह पुष्टि कर लें कि वेंडर का हर दावा सही है, उसकी कीमत सही है और उसके लिए सबूत मौजूद हैं। सिर्फ फाइनेंशियल क्लोजर रणनीतिक नतीजों की जगह नहीं ले सकता। टेक्नोलॉजी ट्रांसफर सबसे कमजोर कड़ी है शायद सबसे बड़ी निराशा टेक्नोलॉजी ट्रांसफर (ळङ्ख) की विफलता रही है। ऑफसेट से उम्मीद थी कि भारत को एडवांस्ड मिलिट्री टेक्नोलॉजी मिलेगी जिसे घरेलू इंडस्ट्री अपना सकेगी और आगे विकसित कर सकेगी। इसके बजाय, टेक्नोलॉजी हासिल करने से कोई खास नतीजा नहीं निकला। जुलाई 2018 तक, सिर्फ पांच टेक्नोलॉजी-ट्रांसफर प्रस्तावों की जांच की गई।

ग्रामीण शिक्षा की बड़ी चुनौतीः एकल-शिक्षक स्कूलों में बदलाव की जरूरत

भारत के वन-टीचर स्कूलों की हालत पर मंथन इस हफ़्ते केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने संसद में बताया कि पूरे भारत में एक लाख से ज्यादा स्कूल ऐसे हैं जहाँ सिर्फ एक ही टीचर है। इससे यह साफ हो गया कि सिर्फ हायर सेकेंडरी और कॉम्पिटिटिव एग्जाम के लेवल पर ही नहीं, बल्कि बेसिक स्कूल लेवल पर भी सुधार की कितनी सख़्त जरूरत है। आंकड़ों के मुताबिक, इन स्कूलों में कुल 33.7 लाख छात्र पढ़ते हैं और हर सिंगल-टीचर स्कूल में औसतन 34 छात्र हैं। ऐसे स्कूलों की सबसे ज्यादा संख्या आंध्र प्रदेश में है, उसके बाद महाराष्ट्र, झारखंड और कर्नाटक का नंबर आता है। ऐसे स्कूलों में दाखिला लेने वाले छात्रों की संख्या के मामले में उत्तर प्रदेश सबसे आगे है, और उसके बाद झारखंड और पश्चिम बंगाल आते हैं। ये बच्चे भारत का भविष्य का 'डेमोग्राफिक डिविडेंड' (जनसांख्यिकीय लाभांश) हैं। इस खूबी की अक्सर बहुत तारीफ की जाती है क्योंकि इससे देश को दूसरी अर्थव्यवस्थाओं के मुकाबले कॉम्पिटिटिव बढ़त मिलती है। अब सामने आए आंकड़ों से डेमोग्राफिक डिविडेंड पर चर्चा में कुछ अहम सवाल भी जुड़ गए हैंः जैसे कि भविष्य के युवा भारतीय इस डिविडेंड का फायदा उठाने के लिए कितने पढ़े-लिखे और कुशल होंगे; उनका नजरिया और अनुभव कैसा होगा; और नेशनल एजुकेशन पॉलिसी (ठएढ) के लक्ष्यों और नतीजों को कैसे हासिल किया जा सकेगा–भले ही वे बहस या विवाद का विषय हों। इनके आसान जवाब नहीं हैं, लेकिन मुख्य बात साफ हैः केंद्र और राज्यों की सरकारों को बेसिक स्कूली शिक्षा पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। यह मुद्दा बहस को स्कूल एनरोलमेंट रेश्यो (दाखिला अनुपात) से आगे ले जाता है। हाल के सालों में इसमें बढ़ोतरी हुई है और यह आधी लड़ाई जीतने जैसा है, क्योंकि जब बच्चे स्कूल में होते हैं, तो उन्हें वह पूरी शिक्षा नहीं मिल पाती जो उन्हें मिलनी चाहिए। जैसा कि एनुअल स्टेटस ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट (अरएफ) 2025 में दिखाया गया है, तीसरी क्लास के सिर्फ 23.4 प्रतिशत बच्चे ही दूसरी क्लास के लेवल का टेक्स्ट पढ़ पाए, और मुश्किल से 33.7 प्रतिशत बच्चे ही बेसिक घटाव कर पाए। हालांकि, 1,04,125 सिंगल-टीचर स्कूल पूरे भारत के लगभग 15 लाख स्कूलों का सिर्फ सात प्रतिशत ही हैं, लेकिन इसे नजरअंदाज करना एक बड़ी गलती होगी। अ'रङ्ग र्फ़ी - अमेरिकी सेना के सामने नई चुनौती, हथियारों की सप्लाई में कमी ने बढ़ाई चिंता अगर सिस्टम की कमियों और ठीक की जा सकने वाली दिक्कतों की वजह से एक भी बच्चे को कमजोर या अपर्याप्त शिक्षा मिलती है, तो उस पर ध्यान देने और उसे सुधारने की जरूरत है।

अमेरिकी सेना के सामने नई चुनौती, हथियारों की सप्लाई में कमी ने बढ़ाई चिंता

दुनिया की सबसे बड़ी सेना के सामने हथियारों की सप्लाई का संकट अमेरिका में हथियारों और गोला-बारूद की बढ़ती कमी सिर्फ ईरान के साथ चल रहे टकराव का नतीजा नहीं है; बल्कि यह अमेरिका की रणनीतिक महत्वाकांक्षाओं और उसके रक्षा उद्योग की क्षमता के बीच एक गहरे संरचनात्मक असंतुलन को दिखाता है। शीत युद्ध के बाद दशकों तक यह माना जाता रहा कि देशों के बीच बड़े युद्ध की संभावना कम है, जिससे अलग-अलग सरकारों ने अचानक जरूरत पड़ने पर तेजी से उत्पादन बढ़ाने की क्षमता (सर्ज कैपेसिटी) के बजाय दक्षता (एफि शिएंसी) को प्राथमिकता दी। नतीजा यह हुआ कि औद्योगिक व्यवस्था शांति के समय की खरीद-फरोख्त के हिसाब से तो ठीक रही, लेकिन लंबे समय तक चलने वाले और भीषण युद्ध के लिए तैयार नहीं थी। यूक्रेन और मध्य पूर्व में हुए युद्धों ने इस मॉडल की कमियों को उजागर कर दिया है। इस कमी के तात्कालिक कारण स्पष्ट हैं। यूक्रेन को लगातार दी जा रही सैन्य मदद–जिसमें लाखों 155 मिमी आर्टिलरी राउंड, पैट्रियट इंटरसेप्टर, जैवलिन एंटी-टैंक मिसाइल और गाइडेड मल्टीपल लॉन्च रॉकेट सिस्टम शामिल हैं–ने पहले ही अमेरिकी भंडार को कम कर दिया था। इजराइल को लगातार समर्थन, लाल सागर में हूतियों के खिलाफ लंबे समय तक चले ऑपरेशन और हाल ही में ईरान के खिलाफ 2026 के सैन्य अभियान ने जरूरी हथियारों के भंडार को और तेजी से खत्म कर दिया है। रिपोर्टों से पता चलता है कि ईरान अभियान में एडवांस्ड प्रिसिजन म्यूनिशन (सटीक निशाना लगाने वाले हथियार) का एक बड़ा हिस्सा इस्तेमाल हो गया, जिसमें टॉमहॉक क्रूज मिसाइल, प्रिसिजन स्ट्राइक मिसाइल (ढ१रट), पैट्रियट और इंटरसेप्टर, और रट-3 व रट-6 जैसी नौसैनिक एयर-डिफेंस मिसाइलें शामिल थीं। हथियारों की खपत की दर शांति के समय के उत्पादन स्तर से कहीं ज्यादा रही है, जिससे ऑपरेशन की जरूरतों और औद्योगिक उत्पादन के बीच का अंतर सामने आया है। हालांकि, इस समस्या की जड़ें अमेरिकी रक्षा उद्योग के धीरे-धीरे कमजोर पड़ने में छिपी हैं। शीत युद्ध के बाद, रक्षा क्षेत्र में कंपनियों के विलय से सप्लायर्स की संख्या कम हो गई, जबकि जरूरी पुर्जों–जैसे सॉलिड रॉकेट मोटर, विस्फोटक, शेल बॉडी, रेयर-अर्थ कंपोनेंट और माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक्स–के उत्पादन को या तो कम कर दिया गया या उन्हें ठप होने दिया गया। लीन सप्लाई चेन (कम लागत वाली और कुशल आपूर्ति श्रृंखला) और लागत दक्षता पर जोर देने से कई जगहों पर 'सिंगल-सोर्स बॉटलनेक' (किसी एक ही स्रोत पर निर्भरता के कारण आने वाली रुकावट) की स्थिति पैदा हो गई, जिससे संकट के समय तेजी से उत्पादन बढ़ाने की अमेरिका की क्षमता सीमित हो गई। कुशल मैन्युफैक्चरिंग लेबर (कामगारों) की कमी और पुराने हो चुके प्रोडक्शन इंफ्रास्ट्रक्चर (उत्पादन के बुनियादी ढांचे) का भी उतना ही बड़ा असर पड़ा है; ये दोनों ही चीजें औद्योगिक उत्पादन बढ़ाने की गति को सीमित करती हैं। हुए उजागर इस ट्रेंड को बदलने की कोशिशों के नतीजे बहुत मामूली रहे हैं। आर्टिलरी शेल का उत्पादन बढ़ाने के लिए भारी निवेश के बावजूद, उत्पादन योजना से कहीं ज्यादा धीमी गति से बढ़ा है; विस्फोटक, धातु के पुर्जों और कुशल मैन्युफैक्चरिंग क्षमता की लगातार कमी ने प्रगति को सीमित किया है। इसी तरह की चुनौतियां हाई-एंड मिसाइल सिस्टम के उत्पादन पर भी असर डालती हैं। पैट्रियट इंटरसेप्टर, मिसाइल और टॉमहॉक क्रूज मिसाइल जैसे हथियारों के प्रोडक्शन में लंबा समय लगता है, इनके लिए बहुत खास सप्लाई चेन और इंडस्ट्रियल इन्वेस्टमेंट की जरूरत होती है, जिन्हें रातों-रात तैयार नहीं किया जा सकता। सिर्फ पैसे के आवंटन से ही लगातार विस्तार के लिए जरूरी वर्कफोर्स, सुविधाएं और सप्लायर नेटवर्क तेजी से तैयार नहीं किए जा सकते। पॉलिसी से जुड़े फैसलों ने इन स्ट्रक्चरल मुश्किलों को और बढ़ा दिया है। खरीद के तरीकों में ऑर्डर का उतार-चढ़ाव, खरीद में लगने वाला लंबा समय और स्टॉक बढ़ाने के बजाय एडवांस्ड प्लेटफॉर्म पर जोर देने की वजह से इंडस्ट्री ने अतिरिक्त क्षमता में निवेश करने से परहेज किया। ग्लोबल सप्लाई चेन और संकट से पहले की अपर्याप्त प्लानिंग ने भी क्षमता को और कम कर दिया। हालांकि, हाल की पहल - जैसे डिफेंस फंडिंग बढ़ाना, डिफेंस प्रोडक्शन एक्ट का इस्तेमाल और लंबे समय के लिए इंडस्ट्रियल समझौते - अहम सुधारात्मक कदम हैं, लेकिन इनसे निकट भविष्य में प्रोडक्शन में कोई खास बढ़ोतरी होने की संभावना कम है। ऑपरेशन के नजरिए से, अमेरिका के पास ईरान के खिलाफ मौजूदा संघर्ष के दायरे में सैन्य ऑपरेशन जारी रखने के लिए पर्याप्त स्टॉक मौजूद है। पारंपरिक एयर-डिलीवर्ड हथियार, जिनमें खऊअट, स्मॉल डायमीटर बॉम्ब और हेलफायर मिसाइलें शामिल हैं, काफी संख्या में उपलब्ध हैं। फिर भी, हाई-एंड स्टैंड-ऑफ हथियारों और मिसाइल-डिफेंस इंटरसेप्टर के बड़े पैमाने पर इस्तेमाल ने वॉशिंगटन की रणनीतिक फ्लेक्सिबिलिटी को सीमित कर दिया है। तनाव बढ़ाने या घटाने के फैसले अब न केवल राजनीतिक विचारों से, बल्कि स्टॉक मैनेजमेंट से जुड़ी चिंताओं से भी प्रभावित हो रहे हैं। स्टॉक पर दबाव ने सहयोगियों को लगातार सैन्य मदद देने को भी मुश्किल बना दिया है और इसे इलाकों में तैनात नौसेना और वायु सेना के एसेट्स की तैयारी पर भी असर डाला है।

बेबाक लेखन और सामाजिक सरोकारों की अद्भुत मिसाल

महान लेखिका जिन्होंने साहित्य में चुने अनजाने और संघर्ष भरे रास्ते इस साल 28 जुलाई को महाश्वेता देवी के बिना दस साल पूरे हो गए। 2026 में उनकी जन्म शताब्दी भी है, और उनके लेखन और सामाजिक कार्यों को पसंद करने वाले लोग उनकी यादगार कहानियों को फिर से पढ़ रहे हैं, क्योंकि उनके शब्दों में जबरदस्त तेवर और संवेदना होती थी। उनके लिए साहित्य उन लोगों की ज़िंदगी से अलग नहीं था जिनकी वे परवाह करती थीं और जिनके हक के लिए लड़ती थीं–यानी वंचित और दबे-कुचले लोग। आज, जब हाशिए पर रहने वाले लोगों के अधिकारों को लेकर इतनी राजनीतिक उथल-पुथल और उदासीनता है, तो महाश्वेता देवी न सिर्फ इन सब बातों को अपनी कहानियों में दर्ज करतीं, बल्कि विरोध-प्रदर्शनों में सबसे आगे भी होतीं। जिसने उन्हें महाश्वेता देवी से जोड़ा–सबसे दमदार और शायद सबसे ज्यादा संकलनों में शामिल कहानी 'दोपदी' (द्रौपदी) है। इसकी मुख्य पात्र एक संथाल आदिवासी महिला और क्रांतिकारी है, जिसका सरकारी बल उसके पति के साथ मिलकर पीछा करते हैं। जानकारी उगलवाने के लिए, पुलिस उसे पकड़ लेती है और उसके साथ गैंग-रेप करती है। महाभारत के उस पात्र के उलट, जिसके नाम पर उसका नाम रखा गया था, इस गरीब आदिवासी महिला को बचाने के लिए कोई दैवीय चमत्कार नहीं होता। अगली सुबह, अपराधियों की उम्मीद के मुताबिक शर्म से दुबकने के बजाय, वह अपने कपड़े पहनने और अपने जख्मी शरीर को ढंकने से इनकार कर देती है। वह नग्न अवस्था में ही उस पुलिस कप्तान की ओर बढ़ती है जिसने रेप का आदेश दिया था। कमजोरों को डराने-धमकाने का आदी वह आदमी, महिला के इस प्रतिरोध से खुद ही डर जाता है। वह महिलाओं पर थोपी गई शर्म की पितृसत्तात्मक सोच और उन्हें दबाने के लिए इस्तेमाल होने वाली यौन हिंसा को चुनौती देती है। वह उस पर तंज कसते हुए कहती है, ₹कपड़ों का क्या फायदा? तुम मेरे कपड़े उतार सकते हो, लेकिन मुझे दोबारा कपड़े कैसे पहनाओगे? क्या तुम मर्द हो? हिम्मत वाली इस महिला की छवि कहानी पढ़ने वाले हर व्यक्ति के जहन में बस जाती है। स्क्रीन तक पहुँची कहानियाँ जहाँ उनकी किताबें नहीं पहुँच पाईं, वहाँ सिनेमा ने पहुँचने की कोशिश की। हैरानी की बात है कि पैरेलल सिनेमा से पहले मेनस्ट्रीम बॉलीवुड महाश्वेता देवी तक पहुँचा। 1968 में आई फि ल्म 'संघर्ष' में, जिसके निर्देशक एच.एस. रवैल थे, उनकी शुरुआती कहानियों में से एक 'लयली आसमानर आइना' को फि ल्माया गया था, जिस पर अबरार अल्वी और गुलजार ने काम किया था। यह उनके उस राजनीतिक और सामाजिक रूप से जागरूक काम से बहुत अलग थी, जिसके लिए वे बाद में जानी गईं। दिलीप कुमार, वैजयंतीमाला और संजीव कुमार की यह फि ल्म 19वीं सदी के बीच के वाराणसी पर आधारित थी

राहुल गांधी के बयान और सियासी असरः कम्युनिकेशन गैप की पड़ताल

कम्युनिकेशन गैप की पड़ताल 29 जुलाई को राहुल गांधी की प्रेस कॉन्फ्रेंस में वे सभी जानी-पहचानी बातें थीं। वहाँ एक बड़ी स्क्रीन थी, फोटो के सबूत थे, एक पहचाना हुआ विरोधी था, एक जोरदार नतीजा था, और विपक्ष के नेता अपनी बात ऐसे रख रहे थे जैसे किसी क्रिमिनल केस में आखिरी दलील दे रहे हों। मामला बहुत गंभीर था। 'कॉकरोच जनता पार्टी' (उखढ) से जुड़े युवा प्रदर्शनकारियों ने आरोप लगाया था कि 20 जुलाई को दिल्ली में हुए विरोध प्रदर्शन के दौरान बहुत ज्यादा बल का इस्तेमाल किया गया, जिसमें पैलेट गन, लाठी, शॉक बैटन और आँसू गैस शामिल थे। गांधी ने कहा कि वह संसद में इस मामले को पूरी तरह से उठाना चाहते थे, लेकिन उन्हें ऐसा करने से रोका गया। फिर उन्होंने दो संभावनाएँ बताईंः या तो गृह मंत्री अमित शाह को पता था कि दिल्ली पुलिस क्या कर रही है, और ऐसे में वह ज़िम्मेदार थे; या उन्हें पता नहीं था, और ऐसे में वह अयोग्य थे। ने कहा, ₹दोनों ही सूरतों में, उन्हें जाना होगा।₹ उन्होंने आगे कहा कि वह ₹उन्हें इससे बचकर नहीं निकलने देंगे।₹ उनके पीछे स्क्रीन पर शाह की फोटो दिख रही थी। यह बिल्कुल राहुल गांधी वाला अंदाज थाः मजबूती से अपनी बात रखना, आरोप लगाना, दो भाषाओं का इस्तेमाल करना और बिना स्क्रिप्ट के बोलना। फिर भी, इससे यह भी पता चला कि उनकी प्रेस कॉन्फ्रेंस ध्यान तो खींचती हैं, लेकिन जरूरी नहीं कि उससे उनका जनाधार भी बढ़े। गांधी तब सबसे ज्यादा असरदार लगते हैं जब वह सवाल पूछते हुए दिखते हैं। वह तब कम असरदार लगते हैं जब ऐसा लगता है कि उन्होंने पहले ही जाँच कर ली है, दोषी की पहचान कर ली है और सजा भी सुना दी है। अवह पल जो लगभग हाथ से निकल गया था गांधी ने बार-बार बेरोजगारी, पेपर लीक, शिक्षा के व्यवसायीकरण और युवा भारतीयों की चिंता के बारे में बात की है। दिल्ली में लामबंदी से पहले उन्होंने कोटा और देहरादून में लोगों से बातचीत की थी। फिर भी, जब उखढ के विरोध प्रदर्शन जोर पकड़ने लगे, तो कांग्रेस ने देखा कि वह नेतृत्व करने के बजाय पीछे चल रही थी। इसके बावजूद, पार्टी की बाद की प्रतिक्रिया जोरदार थी। राहुल और प्रियंका गांधी ने राम मनोहर लोहिया अस्पताल में घायल प्रदर्शनकारियों से मुलाकात की। कांग्रेस के स्वयंसेवकों ने खाना और पानी बाँटा। उनकी कानूनी टीम ने गिरफ़्तार या हिरासत में लिए गए लोगों की मदद की। इसके बाद गांधी ने प्रधानमंत्री आवास के पास धरना दिया, जहाँ से पुलिस ने उन्हें और विपक्ष के अन्य नेताओं को हटा दिया। यह दृश्य बहुत प्रभावशाली था। गांधी अब सिर्फ पोडियम के पीछे से युवाओं के गुस्से पर टिप्पणी नहीं कर रहे थे। उन्होंने खुद को सरकार के सामने खड़ा कर दिया था। इसके लिए उन्हें श्रेय मिलना चाहिए। लेकिन एक असहज सच बना हुआ था। ये विरोध-प्रदर्शन छात्रों के थे। जब सरकार बातचीत के लिए तैयार हुई, तो उसने सीधे उखढ से बात की। शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे और दूसरी माँगों पर भरोसे के बाद आंदोलन वापस ले लिया गया। कांग्रेस ने इस नतीजे का स्वागत किया, लेकिन वह बातचीत की प्रक्रिया से ज्यादातर बाहर ही रही। गांधी ने पत्रकारों से कहा कि यह नतीजा ₹युवाओं की जीत₹ है और कांग्रेस इस आंदोलन का पूरे दिल से समर्थन करना चाहती थी। यह सही नजरिया था। अगर विरोध-प्रदर्शन को अपना बताने की कोशिश की जाती, तो वे युवा ही दूर हो जाते जिन तक गांधी पहुँचना चाहते थे। फिर भी, इस घटना ने एक गहरी कमजोरी उजागर कीः राहुल गांधी राजनीतिक माहौल को पहचान सकते हैं और उसे नैतिक बल दे सकते हैं, लेकिन उन्हें हमेशा यह नहीं पता होता कि उस माहौल को एक लंबे समय तक चलने वाले राजनीतिक रिश्ते में कैसे बदला जाए। उखढ को अपने गुस्से को समझाने के लिए राहुल गांधी की जरूरत नहीं थी। राहुल गांधी को यह समझने की जरूरत थी कि उखढ ने उस गुस्से को दूसरों तक कैसे पहुँचाया। पोडियम पर अभियोजक गांधी के प्रेस कॉन्फ्रेंस करने के तरीके में कई अच्छी बातें हैं। वह सवालों के जवाब देने के लिए तैयार रहते हैं। वह अक्सर फॉलो-अप सवाल भी लेते हैं। वह आसानी से हिंदी और अंग्रेजी के बीच बातचीत करते हैं। उनकी बॉडी लैंग्वेज किसी राष्ट्रपति जैसी औपचारिक न होकर जीवंत होती है। वह लिखित भाषण से हटकर बात करने से नहीं डरते। वह मजाकिया, बेसब्र, आक्रामक और कभी-कभी खुद का मजाक उड़ाने वाले भी हो सकते हैं। भारतीय राजनीतिक संचार की तेजी से नियंत्रित होती दुनिया में, ये बड़ी खूबियाँ हैं। राहुल गांधी के मामले में, उनके संचार में अक्सर मुद्दों को जरूरत से ज्यादा बड़ा-चढ़ाकर पेश करने की समस्या होती है। हर आरोप एक अंतिम खुलासे जैसा लगता है। हर संस्थागत विवाद पूरी तरह सच और पूरी तरह झूठ के बीच की लड़ाई बन जाता है। हर विरोधी न सिर्फ गलत होता है, बल्कि डरा हुआ, समझौता किया हुआ, दोषी या नैतिक रूप से गिरा हुआ भी माना जाता है। सुगत श्रीनिवासराजु का तर्क है कि राहुल गांधी बार-बार साहस और डर, प्यार और नफरत, सच और झूठ जैसे दो विपरीत ध्रुव बनाते हैं और हर मुकाबले में खुद को सही पक्ष में रखते हैं। इस नजरिए से खतरा यह है कि नैतिक दृढ़ता, खुद को ही सही मानने की ज़िद में बदल जाती है और राजनीतिक मुद्दों को धैर्य और सटीकता के साथ आगे बढ़ाने से रोकती है। सिर्फ लोगों तक पहुँचना ही काफी नहीं ह

गजा पर हुए सम्मेलन में ट्रंप ने अर्दोआन को इतनी अहमियत क्यों दी ?

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और मिस्र के राष्ट्रपति अब्दुल फतह अल-सीसी ने सोमवार को शर्म अल-शेख में आयोजित गजा शांति सम्मेलन की अध्यक्षता की.
इस समिट में राष्ट्रपति ट्रंप तुर्की के राष्ट्रपति रेचेप तैय्यप अर्दोआन को सबसे ज्यादा तवज्जो देते दिखे.ट्रंप ने अर्दोआन को न केवल अहमियत दी, बल्कि उनकी जमकर प्रशंसा भी की.इस समिट में दुनिया भर के 20 से ज्यादा नेता पहुँचे थे और ट्रंप ने सबके सामने कहा कि गजा शांति समझौते में अर्दोआन की अहम भूमिका रही है.इस समिट के उद्घाटन भाषण में ट्रंप ने अर्दोआन को सख़्त लेकिन शानदार नेता बताया.ट्रंप ने कहा, "मुझे नहीं पता यह क्या है. मुझे सख़्त लोग उदार और आसान लोगों की तुलना में ज्यादा पसंद हैं. मुझे नहीं पता कि यह क्या पहेली है. शायद यह कोई व्यक्तित्व से जुड़ी समस्या है.लेकिन तुर्की के यह सज्जन, जिनके पास वास्तव में दुनिया की सबसे ताकतवर सेनाओं में से एक सेना है, वह एक सख़्त इंसान हैं. लेकिन वह मेरे दोस्त रहे हैं और जब भी मुझे उनकी जरूरत पड़ी, वह हमेशा मेरे लिए मौजूद रहे हैं.तुर्की में अमेरिका के राजदूत टॉम बराक ने 25 सितंबर को ट्रंप और अर्दोआन की मुलाकात से ठीक पहले कहा था, "तुर्की से न खत्म होनी वाली असहमतियों से ट्रंप थक चुके थे. चाहे वो रूस के एस-400 मिसाइल डिफेंस सिस्टम की खरीद हो या फिर रूस के खिलाफ तुर्की का प्रतिबंध में शामिल ना होना हो. टॉम बराक ने कहा, ₹ऐसे में ट्रंप ने फैसला किया कि वह अर्दोआन को वो चीज देंगे जिसकी उन्हें सबसे ज्यादा दरकार है. वो है- स्वीकार्यता."लेकिन ट्रंप का रुख कब किसके प्रति बदल जाए, यह कहना मुश्किल है. ट्रंप ने अपने पहले कार्यकाल में अर्दोआन को सीरिया में अमेरिका समर्थित कुर्द बलों पर सैन्य कार्रवाई के लिए धमकी दी थी.ट्रंप ने अर्दोआन को लिखे पत्र में कहा था, "सख़्त बनने की कोशिश मत करिए और मूर्खता मत कीजिए. मैं तुर्की की अर्थव्यवस्था को तबाह करने की ज़िम्मेदारी नहीं लेना चाहता हूँ, जबकि मैं ऐसा कर सकता हूँ."
शर्म-अल-शेख समिट में इसराइल के प्रधानमंत्री बिन्यामिन नेतन्याहू को भी आमंत्रित किया गया था, लेकिन वह इसमें शामिल नहीं हुए.
ब्रिटिश अखबार द गार्डियन के डिप्लोमैटिक एडिटर पैट्रिक विंटूर ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि अर्दोआन ने नेतन्याहू को बुलाने पर आपत्ति जताई और आखिरकार इसराइली प्रधानमंत्री को आने की योजना रद्द करनी पड़ी.द गार्डियन ने लिखा है, "तुर्की के राष्ट्रपति ने स्पष्ट कर दिया था कि अगर नेतन्याहू को बुलाया गया, तो शर्म अल-शेख में उनका विमान नहीं उतरेगा. यह टकराव तब शुरू हुआ, जब यह घोषणा की गई कि नेतन्याहू ने ट्रंप का देर से आया निमंत्रण स्वीकार कर लिया है. ट्रंप ने सोमवार सुबह फोन कर मिस्र के राष्ट्रपति को नेतन्याहू की भागीदारी की सूचना दी थी."
द गार्डियन ने लिखा है, "यह स्पष्ट नहीं है कि अर्दोआन की आपत्ति की वजह से नेतन्याहू को दौरा रद्द करना पड़ा, लेकिन यह जरूर है कि अर्दोआन ने अपने विमान से ही अल सीसी को फोन किया था."हालाँकि इसराइली प्रधानमंत्री कार्यालय की ओर से जारी एक बयान में कहा गया, "प्रधानमंत्री नेतन्याहू को अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने मिस्र में आयोजित कॉन्फ्रेंस में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया था.प्रधानमंत्री नेतन्याहू ने राष्ट्रपति ट्रंप को इस निमंत्रण के लिए शुक्रिया कहा लेकिन छुट्टियों की शुरूआत के इतने करीब कार्यक्रम होने के कारण वह इसमें शामिल नहीं हो पाएँगे."
ऐसे में सवाल उठता है कि ट्रंप आखिर अर्दोआन को इतनी तवज्जो क्यों दे रहे हैं?दिल्ली स्थित जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी के पश्चिम एशिया अध्ययन केंद्र में असोसिएट प्रोफेसर मोहम्मद मुदस्सिर कमर कहते हैं कि गजा में शांति को लेकर जो शुरूआती समझौता हुआ है, उसमें कतर, तुर्की और मिस्र की अहम भूमिका थी.मोहम्मद मुदस्सिर कमर कहते हैं, "तुर्की और कतर ने हमास पर दबाव बनाया था कि वो इस डील को मंजूर करे. जाहिर है कि इसी वजह से ट्रंप को इसका श्रेय भी मिल रहा है. ऐसे में ट्रंप की ओर से अर्दोआन की तारीफ बहुत चौंकाती नहीं है.अर्दोआन ट्रंप को भरोसे में लेकर इस शांति समझौते के लिए काम कर रहे थे. ट्रंप के लिए ये प्रतिष्ठा का सवाल था कि किसी भी तरह से गजा में युद्ध बंद हो."मोहम्मद मुदस्सिर कमर कहते हैं, "इस मामले में सऊदी अरब और यूएई की बहुत भूमिका नहीं थी. इसलिए उनके राष्ट्राध्यक्ष के बदले दूसरे प्रतिनिधि आए. मिस्र ने ईरान और हमास को भी बुलाया था. ऐसे में नेतन्याहू को भी न्योता भेजा गया था.मिस्र चाहता था कि यह पूरी तरह से न्यूट्रल रहे. नेतन्याहू के आने को लेकर अर्दोआन की आपत्ति तुर्की की घरेलू राजनीति के कारण भी थी.

पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच फिर हुई झड़पें, एक दूसरे के कई ठिकाने तबाह करने का किया दावा

दक्षिणी अफगानिस्तान के कंधार प्रांत के स्पिन बोल्डक ज़िले में पाकिस्तानी सैनिकों और तालिबान सरकारी बलों के बीच झड़पें हुई हैं.तालिबान सरकार के प्रवक्ता जबीहुल्लाह मुजाहिद ने कहा, ₹आज सुबह पाकिस्तानी सेना ने एक बार फिर कंधार के स्पिन बोल्डक ज़िले में हल्के और भारी हथियारों से अफगानिस्तान पर हमले शुरू कर दिए.उन्होंने कहा कि पाकिस्तानी हमलों में कम से कम 12 आम लोग मारे गए और 100 से ज्यादा घायल हुए हैं.मुजाहिद का दावा है कि जवाबी हमलों में कई पाकिस्तानी सैनिक मारे गए और पाकिस्तानी सैन्य ठिकाने नष्ट हो गए, साथ ही उनके हथियार और टैंक भी जब्त कर लिए गए.पाकिस्तान की सरकार ने अभी तक इस पर कोई आधिकारिक टिप्पणी नहीं की है.
पवजोक अफगान न्यूज ने स्पिन बोल्डक ज़िले के सूचना अधिकारी अली मोहम्मद हकमल के हवाले से बताया कि झड़प में हल्के और भारी हथियारों का इस्तेमाल किया गया.एक स्थानीय पत्रकार ने बीबीसी को बताया कि स्पिन बोल्डक गेट को विस्फोटकों से उड़ा दिया गया.
ऐसा कहा जा रहा है कि लोग स्पिन बोल्डक बाजार छोड़ रहे हैं और कार डीलर अपनी कारें वहां से निकाल रहे हैं.स्थानीय मीडिया ने चिकित्साकर्मियों के हवाले से बताया कि स्पिन बोल्डक में हुए हमले में कई लोग मारे गए हैं और दर्जनों लोग घायल हुए हैं.बीबीसी उर्दू के मुताबिक, 'पाकिस्तानी सुरक्षा सूत्रों ने दावा किया है कि मंगलवार शाम को अफगान तालिबान और टीटीपी ने सीमा पार से पाकिस्तान के कुर्रम जिले में ₹बिना उकसावे की गोलीबारी₹ की, जिसके बाद पाकिस्तानी सेना ने जवाबी कार्रवाई की और तालिबान चौकियों को गंभीर नुकसान पहुंचाया.'वहीं पीटीवी के अनुसार, पाकिस्तानी सेना के अभियान के नतीजे में अफगानिस्तान के प्रांत खोस्त में बुनियादी ढांचे को नुकसान पहुंचा है. हालांकि पाकिस्तान और अफगानिस्तान ने इन झड़पों की आधिकारिक पुष्टि नहीं की है.
'टोलो न्यूज' से बात करते हुए खोस्त के गवर्नर मुस्तगफर गुरबाज ने आरोप लगाया कि मंगलवार शाम करीब सात बजे खोस्त के 'पलूचा' इलाके को पाकिस्तानी सैनिकों ने निशाना बनाया.अफगानिस्तान में सूचना विभाग के प्रमुख अली मोहम्मद ने 'टोलो न्यूज' को बताया कि झड़पों में हल्के और भारी हथियारों का इस्तेमाल किया गया और अभी तक किसी के हताहत होने की खबर नहीं है.उन्होंने आरोप लगाया कि पाकिस्तान की गोलाबारी से नागरिकों के घरों को भी नुकसान पहुंचा है, जिसके बाद स्थानीय लोगों को क्षेत्र से बाहर निकाल दिया गया है.उधर लोअर कुर्रम के वली चीना गांव के एक प्रमुख व्यक्ति इनायत खान ने बीबीसी संवाददाता अजीजुल्लाह खान को बताया कि, ₹मंगलवार शाम करीब सात बजे भारी गोलीबारी और विस्फोटों की आवाजें सुनाई देने लगीं.

भारत-इंग्लैंड टेस्टः शुभमन गिल के जादुई दोहरे शतक ने भारतीय कैंप में जगाई उम्मीद

एक युवा और अनुभवहीन टीम, जिसका नेतृत्व शुभमन गिल ने किया. यही टीम पाँच टेस्ट मैचों की सिरीज के पहले मैच में 835 रन बनाती है.रनों के इस विशाल स्कोर में पाँच बल्लेबाजों ने शतक जड़ा लेकिन टीम इंडिया को इंग्लैंड के हाथों पाँच विकेट से हार मिली.
खेल के इतिहास में, पाँच शतकों के बाद शायद ही कोई टीम हारी हो लेकिन इंग्लैंड ने हेडिंग्ले में भारत को हराकर यह कर दिखाया था.
कोई और टीम होती तो हेडिंग्ले की करारी हार के बाद लड़खड़ाना तय था लेकिन यह वो टीम नहीं है. यहाँ तक कि जसप्रीत बुमराह को बाहर रखने के बावजूद भी नहीं.कप्तान शुभमन गिल ने अपने बल्ले से जवाब देकर भारत की वापसी की कहानी लिखी. 269 रन की व्यक्तिगत पारी, जो 93 साल के टेस्ट इतिहास में किसी भारतीय कप्तान का सर्वोच्च स्कोर है.यह गिल का व्यक्तिगत श्रेष्ठ प्रदर्शन भी था और दूसरे मैच में टेस्ट में पहला दोहरा शतक भी. लेकिन यह स्पष्ट है कि वे अपने लिए नहीं खेल रहे थे. यह टीम के लिए था. यह नई टीम को आकार देने की एक अद्वितीय पहल थी.पहली पारी में भारत ने 587 रन का विशाल स्कोर खड़ा किया और गिल ने इस पारी का नेतृत्व किया.इसके अलावा दूसरे दिन इंग्लैंड को तीन विकेट पर 77 रन पर रोक दिया, जिसमें बेन डकेट डक (जीरो) और ओली पोप गोल्डन डक पर आउट हुए. दोनों बल्लेबाजों को तेज गेंदबाज आकाश दीप ने दो गेंदों के भीतर पवेलियन की राह दिखाई.

कप्तान गिल के आगे बेबस इंग्लिश गेंदबाज

इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स ने गिल को रोकने के लिए सात गेंदबाजों को आजमाया, लेकिन 25 वर्षीय गिल ने शानदार संकल्प, साहस, धैर्य और कौशल दिखाया और हाल के समय में क्रिकेट जगत ने जो सबसे बेहतरीन दोहरे शतक देखे हैं, उनमें से एक दोहरा शतक जड़ा इस शानदार पारी का असर तुरंत महसूस हो या न हो, लेकिन यह टीम और उसके कप्तान की यात्रा की दिशा तय करेगी.जब विराट कोहली, रोहित शर्मा और रविचंद्रन अश्विन जैसे सीनियर खिलाड़ी छह महीनों के अंदर संन्यास ले लेते हैं तो एक नई टीम के लिए बदलाव का समय डराने वाला हो सकता है. अचानक, ड्रेसिंग रूम से नेतृत्व की भावना गायब सी लगती है.नई शुरूआत करने के लिए असाधारण आत्मविश्वास और साहस चाहिए होता है. गिल ने यह ज़िम्मेदारी उठाई है और टीम के लिए एक मार्गदर्शक बन गए हैं.जब टीम का स्कोर पहले दिन लंच से ठीक पहले 95 पर दो विकेट था, तब गिल बल्लेबाजी करने आए. इससे पहले केएल राहुल, जिन्होंने हेडिंग्ले टेस्ट में 137 रन की शानदार पारी खेली थी, इस बार सिर्फ.दो रन ही बना सके और करुण नायर 31 रन बनाकर आउट हो गए थे. ऐसे में टीम को अपने कप्तान से वापसी की उम्मीद थी.गिल ने संभलकर शुरूआत की. ब्राइडन कार्स की गेंद पर एलबीडब्ल्यू की जोरदार अपील हुई और क्रिस वोक्स की गेंद पर एज लगने के बावजूद गिल आउट होने से बच गए.

इराक से लेकर ईरान तक, कितना कामयाब रहा अमेरिका का सैन्य हस्तक्षेप

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने जब इस साल मई महीने में देश के पूर्व राष्ट्रपतियों के हस्तक्षेप करने की नीतियों की कड़ी आलोचना की थी तो दुनिया भर में इस पर खूब चर्चा हुई.उन्होंने 2003 में इराक पर हुए विवादास्पद अमेरिकी हमले की ओर इशारा करते हुए कहा था, "आखिर तथाकथित 'राष्ट्र-निमार्ताओं' ने जितने देश बनाए, उससे कहीं ज्यादा देशों को तबाह कर दिया."उन्होंने कहा, "दखल देने वालों ने उन जटिल समाजों में दखल दिया, जिनके बारे में उनकी कोई समझ नहीं थी."ये बातें उन्होंने सऊदी अरब की राजधानी रियाद की यात्रा के दौरान कही थीं. कई विश्लेषकों ने उनके इस बयान को इस बात का संकेत माना था कि कम से कम ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में अमेरिका का मध्य-पूर्व में दखल अतीत की बात हो जाएगी.लेकिन इन बयानों के महज एक महीने बाद ही अमेरिका ने ईरान के तीन परमाणु ठिकानों पर हमला किया. इस तरह अमेरिका, ईरान और इसराइल के युद्ध में घुस गया.इस हमले के जरिये अमेरिका और इसराइल ने ईरान की परमाणु चाहत को खत्म करने की कोशिश की.हमले के तुरंत बाद ट्रंप ने कहा, "हमारा मकसद ईरान की यूरेनियम संवर्द्धन की क्षमता को खत्म करना और आतंकवाद को समर्थन देने वाले दुनिया के सबसे बड़े देश से पैदा होने वाले परमाणु खतरे को रोकना था."लेकिन इतिहास गवाह है कि जब भी पश्चिमी देशों ने विदेशों में 'समस्या का समाधान' करने के लिए दखल दिया तो अक्सर चीजें योजना के मुताबिक नहीं हुईं.लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स एंड पॉलिटिकल साइंस में मध्य-पूर्व की राजनीति और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के प्रोफेसर और लेबनानी-अमेरिकी लेखक फवाद गर्गेस कहते हैं कि 1940 के दशक के अंत से ही अमेरिका मध्य-पूर्व की राजनीति में दखल देता रहा है.
व्हाट रियली वेंट रॉन्गः द वेस्ट एंड द फेल्योर ऑफ डेमोक्रेसी इन द मिडिल ईस्ट₹ नाम की किताब के लेखक गर्गेस ने कहा, "ईरान के खिलाफ अमेरिका के हालिया हवाई हमले उसकी इस नीति का स्पष्ट उदाहरण है."आइए देखते हैं कि अमेरिका ने किन देशों में दखल दिया और इसके क्या नतीजे हुए.

ईरान में तख़्तापलट

1953 में ईरानी सेना के एक तख़्तापलट ने देश में लोकतांत्रिक रूप से चुने गए प्रधानमंत्री मोहम्मद मोसादेग को हटा दिया. इस काम में अमेरिका और ब्रिटेन ने ईरानी सेना का साथ दिया था.मोसादेग इस वादे के साथ दो साल पहले ही सत्ता में आए थे कि वो ईरान के विशाल तेल भंडारों का राष्ट्रीयकरण करेंगे. लेकिन इसके साथ अमेरिका और ब्रिटेन को संभावित कम्युनिस्ट खतरा दिखा.दूसरे विश्व युद्ध के बाद अमेरिका और ब्रिटेन दोनों ईरान के तेल पर बुरी तरह निर्भर थे.पहले इसे शाह महमूद रजा पहलवी के समर्थन में जनता के विद्रोह के तौर पर पेश किया गया.इस विद्रोह को अमेरिका और ब्रिटेन दोनों की खुफिया एजेंसियों का समर्थन था.साल 2000 में तत्कालीन अमेरिकी विदेश मंत्री मैडलिन अलब्राइट ने खुले तौर पर कहा था कि उस तख़्तापलट में अमेरिका का हाथ था.फिर 2009 में तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने काहिरा में दिए अपने एक भाषण में उस घटनाक्रम में अमेरिका की भूमिका की बात मानी थी.फिर 2013 में उस तख़्तापलट के 60 साल बाद अमेरिकी खुफिया एजेंसी सीआईए ने कुछ दस्तावेज प्रकाशित किए, जिनमें पहली बार उसने उस तख़्तापलट में अपनी इस भूमिका को स्वीकार किया.प्रोफेसर गर्गेस का मानना है कि अमेरिका और ईरान के बीच मौजूदा टकराव की जड़ें भी इसी गोपनीय हस्तक्षेप से जुड़ी हैं.वो कहते हैं, "ईरानियों ने वैध और लोकतांत्रिक तरीके से चुने गए प्रधानमंत्री को हटाकर एक क्रूर तानाशाह यानी ईरान के शाह को देश का शासक बनाने के लिए अमेरिका को कभी माफ नहीं किया."प्रोफेसर गर्गेस बताते हैं, "ईरान में आज जो अमेरिका विरोधी भावना है, वह इसलिए क्योंकि वहाँ की राजनीतिक सत्ता का मानना है कि अमेरिकी हस्तक्षेप की वजह से ही ईरानी राजनीति की दिशा बदल गई है."प्रोफेसर गर्गेस इस बात की ओर भी ध्यान दिलाते हैं कि अमेरिका ने मिस्र के राष्ट्रपति गमाल अब्देल नासिर की नीतियों को भी प्रभावित करने और उनकी राष्ट्रवादी परियोजना की दिशा बदलने की कोशिश की लेकिन इसमें ज्यादा कामयाबी नहीं मिली.

अफगानिस्तान में कट्टर इस्लामी ताकतों का समर्थन

1979 में सोवियत रूस की सेना ने अफगानिस्तान पर हमला किया ताकि एक साल पहले सत्ता में आई कम्युनिस्ट सरकार को समर्थन मिल सके.
लेकिन उसे जल्दी ही एक प्रतिरोधी इस्लामी आंदोलन का सामना करना पड़ा. इसे मुजाहिदीन के नाम से जाना जाता है.ये समूह कम्युनिस्ट सरकार का विरोध करने वाले इस्लामी जिहादी चरमपंथियों से बना था. इसे अमेरिका, पाकिस्तान, चीन और सऊदी अरब समेत कई अन्य देशों का समर्थन हासिल था.शीत युद्ध के दौरान अफगानिस्तान को सबसे अधिक हथियार और धन मुहैया कराने वाले देशों में अमेरिका शामिल था. अमेरिका ये सब इसलिए कर रहा था कि ताकि अफगानिस्तान में सोवियत रूस के मकसद को नाकाम किया जा सके. वर्षों बाद सार्वजनिक किए गए दस्तावेजों, पत्रकारों की जांच और गवाहियों से ये बात सामने आई कि अमेरिका ने सोवियत संघ को अफगानिस्तान में एक ऐसे जाल में फंसाने की कोशिश की थी, जो ज़िंदगियों और संसाधनों की भारी कीमत मांगता था. ठीक ऐसा ही हाल अमेरिकी सेना का वियतनाम युद्ध में हुआ था.अमेरिका के इस मिशन को ऑपरेशन साइक्लोन कहा गया. उस समय की मीडिया रिपोर्टों में इसे 'सीआईए के इतिहास का सबसे बड़ा गुप्त ऑपरेशन कहा गया.'
उस समय के अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने तो कुछ जिहादी नेताओं के एक प्रतिनिधिमंडल को ओवल दफ़्तर में भी बुलाया था.1988 में, जेनेवा समझौते के बाद और अफगानिस्तान में एक दशक के लंबे कब्जे के आखिर में सोवियत नेता मिखाइल गोबार्चेव ने अफगानिस्तान से सोवियत सेनाओं को वापस बुलाना शुरू किया.

मेडागास्करः सैन्य तख़्तापलट में 'जेन जी' का ज़िक्र, कहां है यह देश और क्या है इसका

हिंद महासागर के द्वीपीय देश मेडागास्कर में सैन्य तख़्तापलट हो गया है. सैनिक अधिकारियों का कहना है कि उन्होंने शासन को नियंत्रण में ले लिया है.मेडागास्कर की एलीट सैन्य यूनिट (सीएपीएसएटी) ने राष्ट्रपति एंड्री रजोएलिना को सत्ता से बेदखल कर सरकार की बागडोर अपने हाथ में ली है.दिलचस्प है कि जब 2009 में रजोएलिना ने तत्कालीन राष्ट्रपति मार्क रावालोमानाना को हटाकर सत्ता पर कब्जा किया था तो सेना ने उनका समर्थन किया था.
सेना ने घोषणा की कि संवैधानिक अदालत और चुनाव आयोग सहित प्रमुख लोकतांत्रिक संस्थाओं को निर्लंबित कर दिया गया है.

तख़्तापलट तक कैसे पहुंचे हालात?

दो सप्ताह पहले पानी और बिजली की कमी की वजह से देशभर में युवाओं के नेतृत्व में एक आंदोलन शुरू हुआ था. इस आंदोलन को जेन जी का आंदोलन कहा गया था.यह आंदोलन बढ़ता चला गया जिसके बाद महंगाई जैसे मुद्दों को लेकर प्रदर्शनकारियों ने अपना गुस्सा जाहिर किया और राष्ट्रपति एंड्री रजोएलिना को हटाने की मांग की.शनिवार को अचानक सेना की सबसे ताकतवर यूनिट सीएपीएसएटी के सुरक्षाबलों ने अपनी बैरकों को छोड़ दिया और प्रदर्शनकारियों के साथ जुड़ गए.
दो दिन बाद रिपोर्ट्स आईं कि रजोएलिना फ्रांसिसी सेना की सहायता से दुबई चले गए हैं.सोमवार की रात रजोएलिना ने कहा कि उनकी ज़िंदगी को खतरा है और वो 'सुरक्षित जगह' पर चले गए हैं.इसके कुछ ही घंटों के बाद रजोएलिना के खिलाफ संसद में उनके पद को लावारिस छोड़ देने के बाद महाभियोग की प्रक्रिया शुरू हुई. इसके बाद रजोएलिना ने संसद भंग करने की घोषणा कर दी.हालांकि इसके बाद भी सांसदों ने मतदान करके महाभियोग की प्रक्रिया को पूरा किया. लेकिन सीएपीएसएटी ने सरकार हाथ में लेने की घोषणा कर दी.सीएपीएसएटी के प्रमुख कर्नल माइकल रैंड्रियानिरिना ने कहा है कि वह अगले 18 महीने से दो साल के अंदर चुनाव कराएंगे.उन्होंने कहा है कि मेडागास्कार के जेन जी प्रदर्शनकारी इस बदलाव का हिस्सा होंगे क्योंकि 'सड़कों पर यह आंदोलन शुरू हुआ था और हमें उनकी मांगों का सम्मान करना होगा.'उन्होंने कहा कि उनके साथी अफसरों और उनके पास वर्तमान शासन को हटाने के अलावा कोई विकल्प नहीं था.गौरतलब है कि बीते महीने नेपाल में विरोध प्रदर्शनों के बाद प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली को इस्तीफा देना पड़ा था. इन विरोध

प्रदर्शनों को 'जेन जी आंदोलन' का नाम दिया गया. साल 1997 से 2012 के बीच पैदा हुए लोगों को 'जेनरेशन ज़ूमर्स' या 'जेन जी' कहते हैं.यह पीढ़ी उस दौर में पैदा हुई जब इंटरनेट का प्रभाव काफी बढ़ गया था और जब बड़ी हुई तो सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय हुई.ऐसे में जब नेपाल की सरकार ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर बैन लगाया तो युवाओं ने विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया. जो बाद में हिंसक भी हो गए.
ऐसा माना जाता है कि नेपाल का आंदोलन पहला 'जेन जी आंदोलन' था.अफ्रीका के दक्षिण-पूर्वी तट से दूर स्थित मेडागास्कर दुनिया का चौथा सबसे बड़ा द्वीपीय देश है. लंबे समय तक बाकी दुनिया से अलग-थलग रहने के कारण यह द्वीप अपने अद्वितीय वन्यजीवों के लिए मशहूर है.पारंपरिक रूप से, यहाँ की अर्थव्यवस्था धान, कॉफी, वेनीला और लौंग की खेती पर आधारित रही है.हालांकि इस देश के पास प्राकृतिक संसाधनों की भरमार है लेकिन यहां पर्यटन एक बड़ा व्यवसाय है. इस सब के बावजूद भी यह दुनिया के सबसे गरीब देशों में से एक है और काफी हद तक विदेशी मदद पर निर्भर है.हाल के वर्षों में आए भयावह चक्रवातों ने इसकी आर्थिक मुश्किलें और बढ़ा दी हैं.1960 में फ्रांस से आजादी मिलने के बाद से ही मेडागास्कर ने राजनीतिक अस्थिरता के कई दौर देखे हैं. इनमें तख़्तापलट, हिंसक प्रदर्शन और विवादित चुनाव शामिल हैं.2009 में हुए तख़्तापलट के बाद देश पाँच साल तक राजनीतिक गतिरोध में फंसा रहा, जिससे अंतरराष्ट्रीय आलोचना और आर्थिक प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा.मंगलवार को हुए तख़्तापलट से पहले मेडागास्कर के राष्ट्रपति एंड्री रजोएलिना तीसरे कार्यकाल के लिए पद पर थे.उन्होंने नवंबर 2023 के विवादित चुनाव में जीत हासिल की थी. विपक्ष और यहां तक की उनके कुछ समर्थकों ने भी उन चुनावों का बहिष्कार किया था.इस चुनाव में केवल 46% मतदान हुआ, जो देश के इतिहास में अब तक का सबसे कम माना जाता है. यह गिरावट उस बहिष्कार की अपील के बाद आई जो 10 राष्ट्रपति उम्मीदवारों ने की थी.चुनाव से पहले छह हफ़्तों तक प्रदर्शन और पुलिस झड़पें होती रहीं, जिसके चलते मतदान की पूर्व संध्या पर अंटानानारिवो में कर्फ़्यू लगाना पड़ा.व्यवसायी और पूर्व डीजे रहे रजोएलिना ने 2018 के राष्ट्रपति चुनाव में रावालोमानाना को दूसरे दौर में हराया था, क्योंकि पहले चरण में दोनों में से कोई भी 50% वोट हासिल नहीं कर सका था.उन्होंने 2009 में रावालोमानाना को सेना के समर्थन से तख़्तापलट में हटाया था.

मेडागास्कर के इतिहास की कुछ प्रमुख घटनाएं

350-550 ईस्वीः पहले बसने वाले लोग मेडागास्कर पहुँचे. यह मानव बसावट वाला धरती का अंतिम बड़ा भूभागों में से एक बना.
7वीं-9वीं सदीः अरब व्यापारी यहाँ पहुँचे. मेडागास्कर हिंद महासागर के बंदरगाहों को जोड़ने वाला एक अहम व्यापारिक केंद्र बन गया.16वीं-17वीं सदीः पुर्तगाली और फ्रांसीसी व्यापारिक ठिकाने अस्तित्व में आए.1883ः पहले फ्रांको-होवा युद्ध में फ्रांस मेडागास्कर पर हमला करता है. देश को अपने उत्तरी बंदरगाह एंटसिरानाना (डिएगो सुआरेज) को फ्रांस को सौंपना पड़ता है. 1947-49ः मलागासी विद्रोह- राष्ट्रवादियों ने फ्रांसीसी सैन्य ठिकानों पर हमले किए. फ्रांस ने विद्रोह को कुचल दिया.

नाबालिग से दुष्कर्म का आरोपी अब भी पुलिस की पकड़ से दूर, सरगुजा पुलिस ने कसी शिकंजा, बंदूक जब्त, संपत्ति कुर्की की तैयारी तेज

अम्बिकापुर, 01 अगस्त 2026, द शूटर।
एक मासूम की जिंदगी से जुड़े बेहद संवेदनशील मामले में सरगुजा पुलिस अब हर मोर्चे पर सख्ती के साथ कार्रवाई कर रही है। नाबालिग से दुष्कर्म के आरोप में फरार चल रहे आरोपी तरुण जायसवाल की गिरफ्तारी के लिए पुलिस ने दबाव बढ़ा दिया है। आरोपी की लाइसेंसी बंदूक जब्त कर ली गई है, उसकी चल एवं अचल संपत्ति की जानकारी जुटाकर कुर्की की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है और संभावित ठिकानों पर लगातार दबिश दी जा रही है।थाना कोतवाली में दर्ज इस मामले में घटना के बाद से आरोपी लगातार फरार है। मामले की गंभीरता को देखते हुए डीआईजी एवं एसएसपी सरगुजा आईपीएस राजेश कुमार अग्रवाल ने स्वयं संज्ञान लेते हुए विशेष पुलिस टीम गठित की है। टीम को स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि आरोपी को जल्द से जल्द गिरफ्तार कर कानून के सामने पेश किया जाए। पुलिस ने आरोपी की गिरफ्तारी में मदद करने या उसकी सूचना देने वाले व्यक्ति के लिए 5 हजार रुपये के इनाम की भी घोषणा की है।जांच के दौरान यह भी सामने आया कि आरोपी के नाम पर 12 बोर डीबीबीएल लाइसेंसी बंदूक दर्ज थी। पुलिस ने पहले ही उसका शस्त्र लाइसेंस निरस्त करने की अनुशंसा की थी। आवश्यक कानूनी प्रक्रिया पूरी होने के बाद शनिवार को पुलिस टीम ने आरोपी के घर पहुंचकर उसके परिजनों से लाइसेंसी बंदूक और लाइसेंस जब्त कर लिया।इधर पुलिस ने आरोपी की आर्थिक गतिविधियों और संपत्ति पर भी शिकंजा कसना शुरू कर दिया है। राजस्व विभाग से उसकी चल एवं अचल संपत्ति का पूरा ब्यौरा मांगा गया है। ग्राम भफौली में कथित अतिक्रमित भूमि का भी मौका सत्यापन कराया जा रहा है, ताकि नियमानुसार कुर्की की कार्रवाई आगे बढ़ाई जा सके।पुलिस का कहना है कि आरोपी की तलाश लगातार जारी है। उसके हर संभावित ठिकाने पर छापेमारी की जा रही है और तकनीकी तथा मुखबिर तंत्र की भी मदद ली जा रही है। अधिकारियों का मानना है कि आरोपी ज्यादा दिनों तक कानून से बच नहीं पाएगा।सरगुजा पुलिस ने लोगों से भी अपील की है कि यदि किसी को आरोपी के संबंध में कोई जानकारी मिले तो तत्काल पुलिस को सूचित करें। साथ ही स्पष्ट चेतावनी दी गई है कि आरोपी को शरण देने, उसे छिपाने या किसी भी तरह की सहायता करने वालों के खिलाफ भी कानून के तहत कठोर कार्रवाई की जाएगी। कुलमिलाकर इस पूरे मामले में पुलिस का संदेश साफ है कि नाबालिग से जुड़े गंभीर अपराधों में किसी भी आरोपी को कानून से बचने नहीं दिया जाएगा। गिरफ्तारी से लेकर संपत्ति कुर्की तक हर वैधानिक कदम उठाकर यह सुनिश्चित किया जाएगा कि पीड़िता को न्याय मिले और समाज में कानून के प्रति भरोसा कायम रहे।

गरियाबंद : गेंदा फूल की खेती से किसान हेमचंद साहू की बदली तस्वीर

छुरा। पारंपरिक धान की खेती से सीमित आय अर्जित करने वाले छुरा विकासखण्ड के ग्राम कसेकेरा के किसान हेमचंद साहू ने आधुनिक बागवानी तकनीकों को अपनाकर सफलता की नई मिसाल कायम की है। राष्ट्रीय बागवानी मिशन योजना के अंतर्गत उद्यानिकी विभाग के सहयोग से उन्होंने 0.48 हेक्टेयर क्षेत्र में ड्रिप सिंचाई एवं मल्चिंग तकनीक के साथ गेंदा फूल की खेती शुरू की, जिससे उनकी आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। उन्होंने उद्यानिकी विभाग के अधिकारियों के मार्गदर्शन और तकनीकी सहायता से साहू ने वैज्ञानिक पद्धति से खेती करना सीखा। आधुनिक तकनीक अपनाने से उनका उत्पादन बढ़ा, लागत नियंत्रित रही और फसल की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ। उनके द्वारा गेंदा फूल की बिक्री स्थानीय बाजार के साथ-साथ रायपुर में भी की गई, जिससे उन्हें लगभग दो लाख रुपये का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ। साहू बताते हैं कि पहले धान की खेती से परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करना कठिन था, लेकिन अब फूलों की खेती ने उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत कर दी है। उनकी सफलता को देखकर आसपास के किसान भी गेंदा फूल की व्यावसायिक खेती अपनाने के लिए प्रेरित हो रहे हैं। उद्यानिकी विभाग के अधिकारियों का कहना है कि कम भूमि में अधिक आय देने वाली फूलों की खेती किसानों के लिए लाभकारी विकल्प बन रही है। ड्रिप सिंचाई और मल्चिंग जैसी आधुनिक तकनीकों के उपयोग से जल संरक्षण के साथ उत्पादन और गुणवत्ता दोनों में वृद्धि हो रही है। हेमचंद साहू की सफलता इस बात का प्रमाण है कि सरकारी योजनाओं का लाभ, वैज्ञानिक खेती और समय पर तकनीकी मार्गदर्शन किसानों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

एक करोड़ की ज्वेलरी लेकर फरार आरोपी पर 5 हजार रुपये का इनाम घोषित, सूचना देने वाले की पहचान रहेगी गोपनीय

अम्बिकापुर, 01 अगस्त 2026, द शूटर। सीतापुर में एक करोड़ रुपये मूल्य के सोने-चांदी के आभूषणों से भरा बैग लेकर फरार हुए अज्ञात आरोपी की गिरफ्तारी के लिए सरगुजा पुलिस ने इनाम की घोषणा की है। मामले की गंभीरता को देखते हुए डीआईजी एवं एसएसपी सरगुजा राजेश अग्रवाल ने आरोपी की गिरफ्तारी में मदद करने वाले व्यक्ति को 5 हजार रुपये का पुरस्कार देने की घोषणा की है।पुलिस के अनुसार, थाना सीतापुर में अपराध क्रमांक 296/2026 के तहत मामला दर्ज है। प्रार्थी अरुण देव सोनी, जो हाई स्कूल के पास स्थित श्री काशी विश्वनाथ ज्वेलर्स के संचालक हैं, ने बताया कि 26 जुलाई 2026 की सुबह करीब 11:30 बजे वह अपनी स्कूटी के सामने ज्वेलरी से भरा बैग रखकर दुकान का शटर खोल रहे थे। इसी दौरान एक अज्ञात व्यक्ति मौका पाकर बैग लेकर फरार हो गया। बैग में रखे सोने-चांदी के आभूषणों की कीमत करीब एक करोड़ रुपये बताई गई है।घटना के बाद पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू की। विभिन्न स्तरों पर जांच और पतासाजी के बावजूद अब तक आरोपी का कोई सुराग नहीं मिल सका है। इसके बाद डीआईजी एवं एसएसपी ने पुलिस रेग्युलेशन के प्रावधानों के तहत आरोपी की गिरफ्तारी में सहयोग करने वाले व्यक्ति के लिए इनाम की घोषणा की है।
पुलिस ने स्पष्ट किया है कि आरोपी के संबंध में ऐसी कोई भी विश्वसनीय सूचना, जिससे उसकी गिरफ्तारी संभव हो सके, देने वाले व्यक्ति की पहचान पूरी तरह गोपनीय रखी जाएगी। पुरस्कार प्रदान करने का अंतिम निर्णय पुलिस अधीक्षक, सरगुजा द्वारा लिया जाएगा।आरोपी के संबंध में कोई भी जानकारी होने पर नागरिक पुलिस अधीक्षक सरगुजा (94791-93501), अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (94791-93502) अथवा पुलिस कंट्रोल रूम (94791-93599) पर संपर्क कर सकते हैं।

नाबालिगों की सुरक्षा के लिए सरगुजा पुलिस का विशेष जागरूकता अभियान, अंडरएज ड्राइविंग पर होगी सख्ती

अम्बिकापुर, 01 अगस्त 2026, द शूटर। नाबालिगों को सड़क दुर्घटनाओं से बचाने और सुरक्षित यातायात के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से सरगुजा पुलिस ने विशेष अभियान शुरू किया है। डीआईजी एवं एसएसपी आईपीएस राजेश अग्रवाल के निर्देशन में पुलिस और यातायात टीम विभिन्न स्कूलों में पहुंचकर विद्यार्थियों को यातायात नियमों, हेलमेट के महत्व और बिना ड्राइविंग लाइसेंस वाहन नहीं चलाने की समझाइश दे रही है।पुलिस ने सभी विद्यालयों से भी अपील की है कि बिना वैध लाइसेंस वाले विद्यार्थियों को दोपहिया वाहन से स्कूल आने की अनुमति न दें। यदि कोई नाबालिग वाहन चलाते हुए मिलता है तो पहले उसके अभिभावकों को बुलाकर काउंसलिंग की जाएगी, इसके बाद भी सुधार नहीं होने पर मोटर वाहन अधिनियम के तहत कार्रवाई की जाएगी।
सरगुजा पुलिस ने अभिभावकों से अपील की है कि वे अपने नाबालिग बच्चों को वाहन चलाने के लिए न दें और उन्हें स्कूल के अधिकृत वाहन या परिजनों के साथ ही भेजें। अभियान आगामी दिनों में भी लगातार जारी रहेगा।

स्कार्फ नहीं, सेवा और संस्कार की पहचानः रामानुजनगर के विद्यालयों में उत्साह से मनाया गया विश्व स्कार्फ दिवस

रामानुजनगर, 1 अगस्त 2026 द शूटर। किसी विद्यार्थी के गले में सजा स्कार्फ केवल गणवेश का हिस्सा नहीं होता, बल्कि वह सेवा, अनुशासन, जिम्मेदारी और मानवता के प्रति समर्पण का मौन संदेश भी देता है। इन्हीं मूल्यों को नई पीढ़ी के जीवन में और अधिक गहराई से स्थापित करने के उद्देश्य से शनिवार को रामानुजनगर विकासखंड के विभिन्न विद्यालयों में विश्व स्कार्फ दिवस पूरे उत्साह और गरिमापूर्ण वातावरण में मनाया गया।
भारत स्काउट्स एवं गाइड्स के तत्वावधान में पीएम श्री सेजेस रामानुजनगर, कन्या शाला रामानुजनगर, माध्यमिक शाला कैलाशपुर, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला पतरापाली सहित अन्य विद्यालयों में आयोजित कार्यक्रमों में छात्र-छात्राओं और शिक्षकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस दौरान विद्यार्थियों ने एक-दूसरे को स्काउट स्कार्फ पहनाकर शुभकामनाएं दीं और सेवा, अनुशासन, मित्रता, नेतृत्व तथा राष्ट्रसेवा के आदर्शों को जीवन में अपनाने का संकल्प लिया।
कार्यक्रम में स्काउट प्रतिज्ञा का सामूहिक स्मरण कराया गया। विद्यार्थियों को बताया गया कि समाज और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी निभाने की भावना ही स्काउट आंदोलन की सबसे बड़ी ताकत है। विद्यालय परिसर देशभक्ति, अनुशासन और सेवा भावना से ओतप्रोत दिखाई दिया।
इस अवसर पर स्काउट मास्टर योगेश साहू ने संकुल प्रभारी, प्रधान पाठकों एवं शिक्षकों को स्कार्फ पहनाकर विश्व स्कार्फ दिवस की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि स्कार्फ केवल वर्दी का हिस्सा नहीं, बल्कि यह सेवा, समर्पण, अनुशासन और विश्व बंधुत्व का ऐसा प्रतीक है, जो व्यक्ति को हर परिस्थिति में दूसरों की मदद के लिए प्रेरित करता है।
भारत स्काउट्स एवं गाइड्स, रामानुजनगर के ब्लॉक सचिव बिजेन्द्र साहू ने बताया कि प्रत्येक वर्ष 1 अगस्त को विश्व स्कार्फ दिवस मनाया जाता है। इस दिन दुनिया भर के वर्तमान और पूर्व स्काउट-गाइड सदस्य स्कार्फ धारण कर स्काउट आंदोलन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करते हैं। उन्होंने कहा कि स्काउटिंग बच्चों में नेतृत्व क्षमता, आत्मविश्वास, सामाजिक उत्तरदायित्व, टीमवर्क और सेवा भावना का विकास करती है। ऐसे आयोजन विद्यार्थियों को केवल बेहतर छात्र ही नहीं, बल्कि संवेदनशील, संस्कारवान और जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा भी देते हैं।
कार्यक्रम में विभिन्न विद्यालयों के प्रधान पाठक, शिक्षक-शिक्षिकाएं, स्काउट मास्टर तथा बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। पूरे विकासखंड में विश्व स्कार्फ दिवस उल्लास, अनुशासन और सेवा के संकल्प के साथ मनाया गया, जिसने विद्यार्थियों के मन में समाज और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों का नया एहसास भी जगाया।

जनसुरक्षा और जनजागरूकता को लेकर कमिश्नरेट पुलिस की व्यापक पहल

रायपुर। पुलिस उपायुक्त (पश्चिम क्षेत्र) रॉबिन्सन गुरिया के निर्देशानुसार एवं अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त (पश्चिम) राहुल देव शर्मा और सहायक पुलिस आयुक्त ईशु अग्रवाल, देवांश राठौर एवं नवनीत पाटिल के मार्गदर्शन में पश्चिम जोन के थाना प्रभारी आमानाका निरीक्षक सुधांशु बघेल, पुरानी बस्ती निरीक्षक विनय सिंह बघेल, डी.डी. नगर निरीक्षक गौतम गावड़े, आजाद चौक निरीक्षक राजेश सिंह, सरस्वती नगर निरीक्षक पारस पटेल, कबीर नगर निरीक्षक गगन वाजपेयी, न्यू राजेन्द्र नगर निरीक्षक अजहरउद्दीन, मुजगहन निरीक्षक अमित कौशिक एवं टिकरापारा निरीक्षक राजेश मरई द्वारा अपने-अपने थाना क्षेत्रों के विद्यालयों, सार्वजनिक स्थलों एवं बस्तियों में नागरिकों, विद्यार्थियों एवं अभिभावकों से संवाद स्थापित कर उन्हें यातायात नियमों, महिला एवं बाल सुरक्षा, साइबर अपराधों से बचाव, नशामुक्ति, पुलिस सहायता सेवाओं तथा आंतरिक सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर व्यापक रूप से जागरूक किया गया। इस दौरान थाना प्रभारियों सहित पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों में नाबालिग वाहन चालकों एवं उनके अभिभावकों से मोबाइल फोन के माध्यम से संपर्क कर समझाइश दी गई कि वे अपने बच्चों को बिना वैध ड्राइविंग लाइसेंस एवं बिना हेलमेट के दोपहिया वाहन चलाने की अनुमति न दें। अभिभावकों को बताया गया कि नाबालिगों द्वारा वाहन चलाना न केवल कानून का उल्लंघन है, बल्कि उनके स्वयं के जीवन तथा अन्य नागरिकों की सुरक्षा के लिए भी गंभीर खतरा है। कार्यक्रमों में विद्यार्थियों को सड़क सुरक्षा, हेलमेट एवं सीट बेल्ट के अनिवार्य उपयोग, यातायात संकेतों के पालन, साइबर अपराधों से बचाव, महिला एवं बाल सुरक्षा, नशे से होने वाले दुष्परिणाम तथा आपातकालीन पुलिस सहायता सेवाओं की विस्तृत जानकारी दी गई। साथ ही उन्हें स्वयं यातायात नियमों का पालन करने तथा अपने परिवार एवं समाज को भी जागरूक करने के लिए प्रेरित किया गया। संवाद से समाधान अभियान के अंतर्गत विभिन्न थाना क्षेत्रों में जनसंवाद कार्यक्रम आयोजित किए गए। थाना आमानाका क्षेत्र के बीएसयूपी कॉलोनी एवं आमानाका बस्ती तथा थाना सरस्वती नगर क्षेत्रांतर्गत समता कॉलोनी फेस-2, कोटा स्थित नॉलेज जैन लाइब्रेरी में पुलिस अधिकारियों द्वारा नागरिकों, विद्यार्थियों एवं क्षेत्रवासियों से आत्मीय संवाद स्थापित किया गया। इस दौरान उनकी समस्याओं एवं शिकायतों को गंभीरतापूर्वक सुनकर उनके त्वरित एवं विधिसम्मत निराकरण का आश्वासन दिया गया। जनसंवाद कार्यक्रमों में नागरिकों को कानून-व्यवस्था बनाए रखने, महिला एवं बाल सुरक्षा, साइबर अपराधों से बचाव, यातायात नियमों के पालन, नशामुक्ति, आपातकालीन सहायता सेवाओं तथा पुलिस हेल्पलाइन के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। साथ ही विद्यार्थियों एवं क्षेत्रवासियों को नए आपराधिक कानूनों भारतीय न्याय संहिता, 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 एवं भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 2023 के प्रमुख प्रावधानों से भी अवगत कराया गया। कार्यक्रम के दौरान नागरिकों से अपील की गई कि किसी भी संदिग्ध गतिविधि अथवा आपराधिक घटना की सूचना तत्काल पुलिस को दें

डिजिटल न्याय व्यवस्था को सशक्त बनाने संबंधी विषय पर कल राज्य स्तरीय कार्यशाला

रायपुर। न्याय व्यवस्था को आधुनिक तकनीकों के माध्यम से अधिक सशक्त, सरल, सुगम एवं पारदर्शी बनाने के उद्देश्य से आगामी 2 अगस्त 2026 को रायपुर स्थित होटल बेबीलॉन इंटरनेशनल, वीआईपी रोड में "नवीन आपराधिक कानूनों के माध्यम से डिजिटल न्याय व्यवस्था को सशक्त बनानाऱ विषय पर राज्य स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा। यह कार्यशाला नवीन आपराधिक कानूनों के प्रभावी क्रियान्वयन तथा न्याय प्रणाली में डिजिटल तकनीकों के समावेश के माध्यम से न्यायिक प्रक्रिया को अधिक दक्ष, पारदर्शी एवं जनोन्मुखी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल होगी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य न्यायाधीश, छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय, न्यायमूर्ति रमेश सिन्हा करेंगे। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उप मुख्यमंत्री एवं गृह मंत्री शर्मा, विधि एवं विधायी कार्य मंत्री यादव तथा न्यायमूर्ति चंद्रवंशी की गरिमामयी उपस्थिति रहेगी। इसके साथ ही छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय, बिलासपुर के अन्य न्यायाधीशगण भी कार्यक्रम में सहभागी होंगे। राज्य स्तरीय कार्यशाला में छत्तीसगढ़ राज्य की न्यायिक सेवा के अधिकारीगण, सभी जिलों के पुलिस अधीक्षक, पुलिस महानिरीक्षक, पुलिस महानिदेशक सहित पुलिस एवं न्यायिक तंत्र के वरिष्ठ अधिकारी भाग लेंगे।
क ा र्य श ा ल ा न्यायपालिका, पुलिस एवं अभियोजन तंत्र के मध्य बेहतर समन्वय स्थापित करने के साथ-साथ नवीन तकनीकों के प्रभावी उपयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित की जा रही है। कार्यशाला के दौरान अंतर-संचालनीय आपराधिक न्याय प्रणाली (आईसीजेएस), अपराध एवं अपराधी ट्रैकिंग नेटवर्क एवं प्रणाली (सीसीटीएनएस), डिजिटल न्यायिक समन्वय, नवीन आपराधिक कानूनों के अंतर्गत तकनीकी एकीकरण तथा न्याय एवं पुलिस व्यवस्था के डिजिटलीकरण से जुड़े विभिन्न विषयों पर विस्तृत चर्चा और विचार-विमर्श किया जाएगा। इन विषयों के संबंध में राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (एनआईसी) एवं राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के वरिष्ठ अधिकारी विषय विशेषज्ञ के रूप में तकनीकी प्रशिक्षण एवं विस्तृत प्रस्तुतीकरण देंगे।

क्यों देवी को बदनाम... अंजलि अरोड़ा बनीं 'सीता' तो भड़के यूजर्स- यही बची थी क्या? हिंदू धर्म के लिए शर्म की बात

'कच्चा बादाम' गाने पर डांस करके वायरल हुईं अंजलि अरोड़ा खूब विवादों में भी रही हैं और अब वह एक फिल्म में देवी सीता बनी हैं। हाल ही उनका फर्स्ट लुक सामने आया है, जिसे देख यूजर्स भड़क गए और पूछ रहे हैं कि सीता के रोल के लिए इसे क्यों लिया?

'कच्चा बादाम' पर डांस करके मशहूर हुईं सोशल मीडिया इनफ्लुएंसर और रियलिटी शो स्टार अंजलि अरोड़ा 'मां सीता' बनकर लोगों के निशाने पर आ गई हैं। यूजर्स अंजलि अरोड़ा को खरी-खोटी सुना रहे हैं और कह रहे हैं कि वो देवी सीता को क्यों बदनाम कर रही हैं। दरअसल, अंजलि अरोड़ा जल्द ही फिल्म 'श्री रामायण कथा' में नजर आएंगी। इस फिल्म में वह सीता का किरदार निभा रही हैं। हाल ही फिल्म से सीता के किरदार में अंजलि अरोड़ा का फर्स्ट लुक रिलीज किया गया। अंजलि को देखते ही यूजर्स बरस पड़े।

'श्री रामायण कथा' के फर्स्ट लुक में अंजलि अरोड़ा वनवास के लिए गईं देवी सीता के अवतार में नजर आ रही हैं। उन्होंने गेरुआ रंग की साड़ी पहने और हाथ में फलों की टोकरी लिए नजर आईं। एक और तस्वीर है, जिसमें वह राम बने एक्टर देव शर्मा के साथ रोमांटिक पोज में नजर आ रही हैं। अंजलि को सीता बने देख यूजर्स को अच्छा नहीं लगा और उन्होंने सवाल किया कि जो लड़की इतने विवादों में रही है और कथित एमएमस को लेकर भी सुर्खियों में रही, उसे देवी सीता के रोल में क्यों लिया गया?

सीता बनीं अंजलि अरोड़ा पर यूजर्स ने निकाला गुस्सा, किए ऐसे कमेंट्स

एक यूजर ने लिखा, 'क्यों सीता का नाम बदनाम कर रहे हो?' एक का कमेंट है, 'अब कच्चा बादाम बनेगी सीता।' एक यूजर बोला, 'यार इसको क्यों सीता बनाया? इतनी सुंदर लड़कियां हैं इंडिया में, यही मिली थी क्या इनको?' एक का कमेंट आया, 'यह हमारे धर्म का अपमान है। यह फिल्म रिलीज नहीं होनी चाहिए। लोग इस फिल्म के जरिए हमारी माता सीता के चरित्र पर तरह-तरह के सवाल उठाएंगे। इसका विरोध होना चाहिए।' एक बोला, 'कैसे कैसे लोगों को रोल दे दिया जाता है?' एक यूजर का कमेंट है, 'सीता के रूप में ऐसे घटिया लोगों को दिखाया गया है, जो हिंदू धर्म के लिए कितनी शर्म की बात है। मुंह उठा के सीता बना दिया। कम से कम कोई और धर्म अपने ईश्वर के प्रति अपनी आस्था, प्रेम और सम्मान के साथ ऐसा नहीं करता।''श्री रामायण कथा' को अभिषेक सिंह डायरेक्ट कर रहे हैं और दिसंबर में रिलीज होगी। फिल्म में अंजलि अरोड़ा और देव शर्मा के अलावा रजनीश दुग्गल, निर्भय वाधवा और शील वर्मा नजर आएंगे।

एक लाख झूठे मेरे होंगे, तब वो पैदा हुई होगी.

'बिग बॉस 19' की तान्या मित्तल चर्चा में हैं। अब चाहत पांडे ने उनपर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि वो तान्या का ग्वालियर वाला आलीशान घर देखना चाहती हैं, जिसके आगे 5 और 7 स्टार होटल भी कुछ नहीं है। उन्होंने ये भी कहा कि उन्हें तान्या से नफरत है।

रिएलिटी शो 'बिग बॉस 19' की तान्या मित्तल 'शेखी बघारने' के कारण हर तरफ छाई हुई हैं। अब 'बिग बॉस 18' की कंटेस्टेंट चाहत पांडे ने कहा है कि उन्हें तान्या का घर देखना है। ये भी बोला कि वो सिर से लेकर पैर तक झूठ हैं, उन्हें देखकर नफरत और चिढ़ होती है। जब एक लाख झूठे मेरे होंगे, तब जाकर वो पैदा हुई होगी।

चाहत पांडे ने 'टेली मसाला' को दिए इंटरव्यू में कहा, 'मुझे ऐसी फीलिंग आती है कि मुझे तान्या मित्तल का घर देखना है। मैं घर जाना चाहती हूं। बिग बॉस के बाद तान्या प्लीज मुझे इनवाइट करना, मैं आपके घर आऊंगी और मेरे साथ-साथ बहुत सारे लोग हैं बाहर जो आपका घर देखना चाहते हैं तो प्लीज आप बाहर आइये और मुझे इनवाइट कीजिए और मैं सबको आपका घर दिखाना चाहती हूं। क्योंकि मैं बहुत एक्साइटेड हूं, क्योंकि मुझे देखना है

करवा चौथ पर 'चांद' सी खूबसूरत ऐश्वर्या का वीडियो वायरल, पतिदेव संग हंसती-मुस्कुराती दिखीं, फैंस बोले- माशाअल्लाह

ऐश्वर्या राय बच्चन और अभिषेक बच्चन का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। बताया जा रहा है कि ये करवा चौथ का वीडियो है। पर कुछ लोग ये दावा कर रहे हैं कि ये पुराना वीडियो है। खैर इसमें ऐश्वर्या की खूबसूरती देखकर फैंस उनकी तारीफ करते नहीं थक रहे हैं। ऐश्वर्या राय बच्चन का एक अनदेखा वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इसमें वो खूबसूरत लाल सलवार-सूट में नजर आ रही हैं। फैंस दावा कर रहे हैं कि ये करवा चौथ के जश्न का है। उनके एक फैन पेज द्वारा उनके शेयर किए गए इस छोटे से वीडियो में ऐश्वर्या अपने पति अभिषेक बच्चन के साथ मुस्कुराती और बातें करती नजर आ रही हैं। ऐश्वर्या राय बच्चन ट्रेडिशनल रेड सलवार-सूट, झुमके और माथे पर बिंदी लगाए नजर बेहद खूबसूरत दिख रही थीं। अभिषेक बच्चन काले रंग के कपड़ों में नजर आ रहे हैं। हालांकि, कुछ लोग कॉमेंट्स कर रहे हैं कि ये वीडियो काफी पुराना है। करवा चौथ का नहीं है। ऐश्वर्या की खूबसूरती की जमकर तारीफ हो रही है। एक यूजर ने कहा, 'वो इतनी खूबसूरत हैं कि उनकी एक झलक पाने के लिए चांद को भी चमका सकती हैं या यूं कहें कि आसमान में ही रह सकती हैं।' दूसरे ने कहा, 'बेहद खूबसूरत।' तीसरे ने कहा, 'माशाअल्लाह।'

अभिषेक भी रखते हैं करवा का व्रत

हालांकि, ये स्पष्ट नहीं है कि ये वीडियो हाल का है या पिछले साल का। अभिषेक और ऐश्वर्या अक्सर अपने करवा चौथ सेलिब्रेशन की झलक सोशल मीडिया पर शेयर करते हैं। एक पुरानी पोस्ट में अभिषेक ने (पहले ट्विटर) पर लिखा था, '#करवाचौथ, शुभकामनाएं महिलाओं... और उन कर्तव्यनिष्ठ पतियों को भी जिन्हें अपनी पत्नियों के साथ व्रत रखना चाहिए! मैं रखता हूं।'

तलाक की खूब हुई थी चर्चा

अभिषेक और ऐश्वर्या के बिगड़े रिश्ते और तलाक की तब तक खूब चर्चा हुई थी, जब तक ऐश्वर्या कान्स में मांग में लाल सिंदूर भरकर रेड कार्पेट पर नहीं उतरी थीं।

ऋतिक रोशन पहुंचे दिल्ली हाईकोर्ट, पर्सनैलिटी राइट्स की सुरक्षा का मामला, ऐश्वर्या-अभिषेक और करण खटखटा चुके दरवाजा

नई दिल्ली, । बॉलीवुड स्टार्स ऐश्वर्या राय बच्चन, करण जौहर और अभिषेक बच्चन के बाद अब ऋतिक रोशन भी अपने पर्सनैलिटी राइट्स की सुरक्षा के लिए दिल्ली हाईकोर्ट पहुंचे हैं। उन्होंने न्यायालय का दरवाजा खटखटाते हुए इनकी सुरक्षा के लिए गुहार लगाई है। केस की सुनवाई बुधवार को होगी।

ऋतिक रोशन ने खटखटाया दिल्ली हाईकोर्ट का दरवाजा

बॉलीवुड स्टार्स ऐश्वर्या राय बच्चन, करण जौहर और अभिषेक बच्चन के बाद अब ऋतिक रोशन भी अपने पर्सनैलिटी राइट्स की सुरक्षा के लिए दिल्ली हाईकोर्ट पहुंचे हैं। उन्होंने न्यायालय का दरवाजा खटखटाते हुए इनकी सुरक्षा के लिए गुहार लगाई है। केस की सुनवाई बुधवार को होगी।बताया जा रहा है कि ऋतिक रोशन ने अपने नाम, फोटो और व्यक्तित्व के अन्य पहलुओं को बिना अनुमति व्यावसायिक उपयोग और दुरुपयोग से बचाने के लिए अदालत में एक याचिका दायर की है। जस्टिस मनमीत प्रीतम सिंह अरोड़ा बुधवार को इस मामले की सुनवाई कर सकते हैं।

याचिका में कहा गया है कि उनकी तस्वीरों और आवाज की मदद से लोग गैरकानूनी तरीके से कमाई भी कर रहे हैं। इस पर तुरंत रोक लगाई जानी चाहिए। जनरेटिव एआई और डीपफेक तकनीकों के बढ़ते चलन के कारण फिल्मी सितारों से लेकर उद्योगपतियों तक, बड़ी संख्या में लोग अपने पर्सनैलिटी राइट्स की सुरक्षा के लिए न्यायालय पहुंच रहे हैं। इसका उद्देश्य किसी व्यक्ति के नाम, फोटो, आवाज आदि के बिना अनुमति व्यावसायिक शोषण को रोकना है।

ऐश्वर्या, अभिषेक और करण जा चुके हैं कोर्ट

इससे पहले ऐश्वर्या राय बच्चन, करण जौहर और अभिषेक बच्चन भी पर्सनैलिटी राइट्स की सुरक्षा के लिए कोर्ट जा चुके हैं। अलग-अलग अदालतों ने तीनों सेलेब्रिटी को राहत देते हुए उनकी तस्वीरों और आवाज को बिना अनुमति के इस्तेमाल करने पर रोक लगाई थी। साथ ही यह भी कहा था कि इन एक्टर्स को भ्रामक या अपमानजनक तरीके से चित्रित करने के लिए एआई सहित प्रौद्योगिकी का उपयोग करना गोपनीयता और गरिमा का उल्लंघन है।

कोई विशेष कानून नहीं बना है

जानकारों का कहना है कि वैसे तो भारत में अभी तक पर्सनैलिटी राइट्स को निर्यात्रित करने वाला कोई विशेष कानून नहीं है,

रानू मंडल को ये क्या हो गया? 5 साल बाद इस हाल में मिली सिंगर, घर में रेंग रहे कीड़े, न खाना और ना ही कपड़े

रानू मंडल याद हैं? लता मंगेशकर का गाना गाकर रातोंरात वायरल हुईं रानू मंडल 5 साल बाद बदहाल स्थिति में मिलीं। न खाने को और ना पहनने को कपड़े। जिस घर में रहती हैं, वह कचरे और बदबू से भरा है। दीवारों पर कीड़े रेंगते हैं। रानू की दिमागी हालत भी ठीक नहीं बताई जा रही। रानू मंडल याद हैं? यह रेलवे स्टेशन पर लता मंगेशकर का एक गाना गाकर रातोंरात वायरल हो गई थीं। देश के कोन-कोने से लोग रानू मंडल से मिलने और आवाज रिकॉर्ड करने पहुंचने लगे थे। बाद में उन्हें हिमेश रेशमिया ने अपनी फिल्म में गाने का मौका दिया और कई रियलिटी शोज में भी गईं। देखते ही देखते यह सिलेब्रिटी सिंगर बन गई और रातोंरात खूब नाम और शोहरत मिली। पर आज रानू मंडल की हालत ऐसी है कि देखकर दिल पसीज जाएगा। जैसी हालत में और जिस घर में वह अभी रह रही हैं, उसे देख रोंगटे खड़े हो जाएंगे। खाने-पीने तक को भी कुछ नहीं है। और तो और रानू मंडल की मानसिक हालत भी ठीक नहीं है।

हर किसी को दौलत और शोहरत आसानी से नसीब नहीं होती और जिसे होती है, वो इसे संभाल नहीं पाता। रानू मंडल के साथ भी यही हुआ था। कोलकाता के रानाघाट में रहने वालीं रानू मंडल का गुजारा रेलवे स्टेशन पर गाकर चलता था, पर रातोंरात उन्हें जबरदस्त शोहरत मिली और मैनेजर भी रख लिया था। लेकिन अपने ही बर्ताव के कारण रानू मंडल 'अर्श से फर्श पर' आ गिरी। उस वक्त तो लोगों ने उनकी खूब आलोचना की और खरी-खोटी सुनाई, पर आज हालत देखकर दया आती है।

रानू मंडल की मधुर आवाज सुनकर पूरा देश फिदा हो गया था। बाद में रानू मंडल को कुछ रियलिटी शोज में भी बुलाया गया। उन्होंने हिमेश रेशमिया की फिल्म 'हैप्पी हार्डी एंड हीर' में गाना भी गाया था, जो साल 2020 में आई थी। हालांकि, इसके कुछ समय बाद ही रानू मंडल का बर्ताव बदल गया। उनके कई वीडियोज सोशल मीडिया पर वायरल हुए, जिनमें वह फैंस पर भड़कतीं और गलत तरीके से पेश आती दिखीं। इस कारण उनकी खूब आलोचना हुई और भद पिटी... और फिर रानू मंडल सबकी नजरों से ओझल हो गईं।

अब 5 साल बाद वापस पुराने हाल में रानू मंडल

अब 5 साल बाद वह कोलकाता के रानाघाट में मिलीं। यूट्यूबर निशू तिवारी वहां रानू मंडल के घर पहुंचीं और उनका हाल दिखाया। पता चला कि रानू मंडल किसी से भी खाली हाथ नहीं मिलतीं। जो भी उनसे खाली हाथ मिलने जाता है, वह उस पर भड़क जाती हैं।

घर में दीवारों पर रेंगते कीड़े, हर तरफ कचरा और टॉयलेट की बदबू

रानू मंडल एकदम बदहाल स्थिति में दिखीं। घर में हर तरफ सामान बिखरा हुआ और कचरा फैला हुआ था। पूरे घर में टॉयलेट की बदबू थी। दीवारों पर कीड़े चल रहे थे। यह भी पता चला कि रानू मंडल की मानसिक हालत ठीक नहीं है। उन्हें न तो कुछ याद है और ना ही वह कुछ समझ पाती हैं। यूट्यूबर ने यह भी बताया कि रानू मंडल अपनी कही बात भी 5 मिनट में भूल जाती हैं। रानू मंडल की मानसिक हालत नहीं ठीक, दूसरों के सहारे जीने को मजबूर

मैंने शाहरुख से ज्यादा स्ट्रगल... कंगना रनौत ने किंग खान से की अपनी तुलना, बोलीं- मैं गांव से आई और वो दिल्ली से

कंगना रनौत ने अपनी तुलना शाहरुख खान से की है और कहा है कि उन्होंने किंग खान से ज्यादा मेहनत की है। कंगना का कहना है कि उनकी जर्नी शाहरुख की जर्नी से बहुत मुश्किल है। वह गांव से आईं, जबकि शाहरुख दिल्ली के हैं।

कंगना रनौत अकसर ही शाहरुख खान और बॉलीवुड के बाकी खान के साथ अपनी तुलना करती आई हैं। वह खुद को 'लेडी खान' मानती हैं और तीनों खान के साथ काम भी नहीं करना चाहतीं। और अब कंगना ने एक बार फिर शाहरुख से अपनी तुलना की है, और कुछ ऐसा कह दिया है जो फैंस को भी हैरान कर रहा है। कंगना का कहना है कि उन्होंने शाहरुख से ज्यादा मेहनत की है, और अपने दम पर मुकाम बनाया। कंगना ने यह भी कहा कि उन्होंने गांव से मुंबई आकर मुकाम पाया, जबकि शाहरुख को दिल्ली के रहने वाले हैं और कॉन्वेंट स्कूल में पढ़े हैं 'हिंदुस्तान टाइम्स' के मुताबिक, कंगना रनौत ने यह बात दिल्ली के एक इवेंट में कही। एक्ट्रेस ने कहा कि छोटे से गांव से किसी ने भी उनकी जैसी सफलता हासिल नहीं की है। इसके बाद उन्होंने अपनी जड़ों और बॉलीवुड में अपने सफर के बारे में बात की।

कंगना रनौत ने शाहरुख से मुश्किल बताई अपनी जर्नी

कंगना ने कहा, 'मुझे इतनी सफलता क्यों मिली? शायद ही कोई और होगा जो गांव से आकर मेनस्ट्रीम में इतनी सफलता हासिल कर पाया हो। आप शाहरुख खान की बात करें। वो दिल्ली से हैं, कॉन्वेंट में पढ़े हैं। मैं एक ऐसे गाँव से हूं, जिसके बारे में किसी ने सुना भी नहीं होगा- भांबला।'

खुद को बताया शाहरुख से ज्यादा मेहनती

कंगना ने फिर कहा, 'हो सकता है कि अन्य लोग इससे असहमत हों, लेकिन मुझे लगता है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं बेहद ईमानदार हूं, न केवल लोगों के साथ, बल्कि खुद के साथ भी। मैंने बॉलीवुड में कदम जमाने के लिए बहुत मेहनत की है।'

घर से भागकर मुंबई आईं, फिल्मी करियर और नेशनल अवॉर्ड्स

मालूम हो कि कंगना यंग एज में ही घर से भागकर मुंबई आ गई थीं। उन्होंने 19 साल की उम्र में फिल्म 'गैंगस्टर' से अपने एक्टिंग करियर की शुरूआत की थी। इसके बाद 'राज 2' 'तनु वेड्स मनु', 'तनु वेड्स मनु 2' और 'फैशन' जैसी फिल्मों से पॉपुलैरिटी बटोरी। कंगना अपने करियर में चार नेशनल अवॉर्ड्स जीते।

अक्षय कुमार के बेटे आरव ने चोरी-चुपके बना लिया था शेफाली शाह का वीडियो, ट्विंकल खन्ना के शो में अब हुआ खुलासा

अक्षय कुमार और ट्विंकल खन्ना का बेटा फिल्मों से दूर है और फिलहाल उनका इरादा भी नहीं इंडस्ट्री जॉइन करने का। हालांकि, एक बार उन्होंने गार्डन में चुपके से एक ऐसा सीन शूट किया था, जिसमें शेफाली शाह उनकी मां के साथ बैठकर गार्डन में रो रही थीं।

शेफाली शाह का वीडियो आरव ने चुपके से बनाया

शेफाली शाह का बॉलीवुड में सफर बहुत आसान नहीं रहा। हालांकि उन्हें अपनी कुछ फिल्मों के लिए क्रिटिक्स से जमकर तारीफें मिली हैं जिनमें 'मॉनसून वेडिंग' और 'वक्त' शामिल हैं। हालांकि हिंदी सिनेमा में उन्हें वो पहचान सालों तक नहीं मिल पाई। 'दिल्ली क्राइम' के आने के बाद ही उनके करियर में एक नया मोड़ आया, जिसने उनके करियर को एक नया आयाम दिया। अब एक किस्सा सामने आया है जो अक्षय कुमार के बेटे आरव से जुड़ा है।पिछले दिनों ट्विंकल खन्ना के साथ उनके यूट्यूब चैनल 'ट्वीक इंडिया' पर बातचीत में दोनों पुरानी दोस्तों ने एक पुरानी यादें ताजा की। ट्विंकल ने याद करते हुए कहा, 'शेफाली भी मेरी पुरानी दोस्त हैं और एक बार हम मेरे बगीचे में बैठे थे। वो इस बात से परेशान थीं कि उन्हें वैसा काम नहीं मिल रहा था जो उन्हें मिलना चाहिए था और वो रो रही थीं।'

शेफाली ने कहा- टेप जारी कर देना चाहिए अब

ट्विंकल ने आगे कहा, 'लेकिन चूंकि हर कहानी में कोई न कोई नया मोड़ तो होता ही है, इसलिए हमें झाड़ियों में सरसराहट सुनाई दी और पता चला कि वो मेरे बेटे की थी, जो एक वीडियो टेप पकड़े हुए इस पूरी बातचीत को रिकॉर्ड कर रहा था। तो कुछ लोगों के पास एक र* टेप घूम रहा है... उसके पास एक सिसकने वाला टेप है।' इस पर शेफाली ने मजाकिया अंदाज में जवाब दिया, 'शायद हमें इसे अब जारी कर देना चाहिए, मैं फेमस हो जाऊंगी।'

अक्षय कुमार की मां की भूमिका निभाई

अपने करियर की शुरूआत में, शेफाली शाह ने खुद को मां वाले रोल में टाइपकास्ट पाया। उन्होंने 'वक्त' में अक्षय कुमार की मां की भूमिका निभाई, जबकि वह उनसे छोटी थीं और बाद में 'दिल धड़कने दो' में भी इसी तरह की भूमिका निभाई। उसके बाद, उन्होंने फैसला लिया कि अब समय आ गया है कि एक लाइन खींच दी जाए।

'मुझे लगा कि अगर मैंने ये फिल्में कीं तो ये मेरे लिए अंत होगा'

उन्होंने कहा, 'दिल धड़कने दो फिल्म के बाद, मैंने एक फैसला लिया कि मैं उन लोगों की मां का किरदार नहीं निभाना चाहती जो मुझसे बस कुछ साल छोटे हैं।'

सीएम हेल्पलाइन के बाद खुली पोल: एसडीएम जांच में अनुसूचित जनजाति की भूमि की बिक्री प्रथम दृष्टया नियम विरुद्ध, उप पंजीयक कार्यालय की भूमिका पर उठे सवाल

*** शिकायत पर महीनों तक नहीं हुई कार्रवाई, आरटीआई का भी नहीं मिला जवाब; अब कलेक्टर को भेजी गई जांच रिपोर्ट**

बैकुण्ठपुर। द शूटर। कोरिया जिले के बैकुण्ठपुर स्थित उप पंजीयक कार्यालय एक बार फिर विवादों के घेरे में है। अनुसूचित जनजाति की भूमि के कथित अवैध हस्तांतरण के मामले में एसडीएम कार्यालय की जांच में प्रथम दृष्टया नियमों के उल्लंघन के संकेत मिलने के बाद मामला अब कलेक्टर कोरिया के पास आगे की कार्रवाई के लिए भेज दिया गया है। इस पूरे प्रकरण में शिकायतकर्ता ने उप पंजीयक कार्यालय की भूमिका पर भी गंभीर सवाल उठाए हैं।

शिकायतकर्ता महेन्द्र पाण्डेय ने 17 अप्रैल 2026 को अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) बैकुण्ठपुर के समक्ष शिकायत प्रस्तुत कर आरोप लगाया था कि ग्राम नरसिंहपुर स्थित खसरा नंबर 19, रकबा 0.275 हेक्टेयर भूमि, जो अनुसूचित जनजाति वर्ग के व्यक्ति राजेश कुमार पिता सुंदर साय गोंड, निवासी ग्राम सरभोका के नाम दर्ज थी, उसे मनोज सूर्यवंशी पिता राजकुमार सूर्यवंशी, निवासी ब्राम्हणबहरा, पोस्ट केरेगांव, तहसील नगरी, जिला धमतरी द्वारा खरीद लिया गया। शिकायत में कहा गया कि छत्तीसगढ़ के प्रचलित राजस्व प्रावधानों के अनुसार अनुसूचित जनजाति की भूमि का अन्य वर्ग के व्यक्ति द्वारा बिना सक्षम अनुमति के क्रय-विक्रय नहीं किया जा सकता, इसके बावजूद 24 दिसंबर 2025 को लगभग 9 लाख 35 हजार रुपये में उक्त भूमि की रजिस्ट्री बैकुण्ठपुर उप पंजीयक कार्यालय में कर दी गई।

शिकायतकर्ता का आरोप है कि शिकायत दिए जाने के बाद एक माह तक कोई कार्रवाई नहीं की गई। इसके बाद उन्होंने सूचना के अधिकार अधिनियम के

तहत आवेदन देकर 17 अप्रैल 2026 की शिकायत पर हुई कार्रवाई की जानकारी मांगी, लेकिन जन सूचना अधिकारी द्वारा निर्धारित समय सीमा में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं कराई गई। इसके बाद शिकायत मुख्यमंत्री हेल्पलाइन में दर्ज कराई गई।

मुख्यमंत्री हेल्पलाइन में दर्ज शिकायत की जांच के दौरान अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) कार्यालय ने संबंधित हल्का पटवारी से प्रतिवेदन प्राप्त किया। 20 जुलाई 2026 को जारी पत्र में उल्लेख किया गया कि पटवारी के प्रतिवेदन के अनुसार भूमि विक्रेता अनुसूचित जनजाति वर्ग का सदस्य है, जबकि खरीदार सूर्यवंशी जाति का है। प्रतिवेदन में स्पष्ट किया गया कि अनुसूचित जनजाति वर्ग की भूमि को अन्य वर्ग का व्यक्ति बिना सक्षम अनुमति के क्रय नहीं कर सकता। साथ ही यह भी उल्लेख किया गया कि उक्त नामांतरण उप पंजीयक कार्यालय के माध्यम से किया गया है तथा प्रथम दृष्टया यह मामला विस्तृत जांच का विषय है। एसडीएम कार्यालय ने अपनी रिपोर्ट में यह भी बताया कि मामले को आगे की जांच एवं आवश्यक कार्रवाई के लिए कलेक्टर, जिला कोरिया को पत्र क्रमांक 4620 के माध्यम से प्रेषित कर दिया गया है। इस पूरे मामले को लेकर शिकायतकर्ता ने उप पंजीयक कार्यालय की कार्यप्रणाली पर भी सवाल खड़े किए हैं। उनका कहना है कि रजिस्ट्री के दौरान नियमानुसार राजस्व अभिलेखों एवं मिसल का परीक्षण किया जाना आवश्यक होता है, लेकिन व्यवहार में इसकी अनदेखी की जा रही है। आरोप है कि कार्यालय के बाहर बैठे दस्तावेज लेखक बिना आवश्यक अभिलेखों के दस्तावेज तैयार कर देते हैं और रजिस्ट्री के समय आवश्यक परीक्षण नहीं किया जाता, जिससे शासकीय एवं प्रतिबंधित भूमि के हस्तांतरण की आशंका बढ़ रही है। शिकायतकर्ता ने यह भी कहा कि यदि उनकी शिकायत पर समय रहते निष्पक्ष जांच की जाती तो मुख्यमंत्री हेल्पलाइन तक जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। उन्होंने कलेक्टर कोरिया से मांग की है कि ऐसे मामलों की गंभीरता से जांच कर दोषियों के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई की जाए, ताकि भविष्य में अनुसूचित जनजाति की भूमि तथा शासकीय भूमि के कथित अवैध पंजीयन पर प्रभावी रोक लगाई जा सके।

१ लाख युवाओं को भाजपा की विचारधारा से जोड़ने के लक्ष्य के साथ चल रहा ज्वॉइन बीजेवायएम सदस्यता अभियान : राहुल टिकरिहा

रायपुर।द शूटर। भारतीय जनता युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष राहुल टिकरिहा ने कहा कि भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव के मार्गदर्शन में युवाओं और नव-मतदाताओं को भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा से जोड़ने के उद्देश्य से ज्वॉइन बीजेवायएम सदस्यता अभियान चलाया जा रहा है। यह अभियान 23 जुलाई से 20 सितंबर तक प्रदेशभर में संचालित होगा, जिसका लक्ष्य 2 लाख युवाओं एवं नव-मतदाताओं को भाजपा और युवा मोर्चा से जोड़ना है।

रायपुर स्थित भाजपा प्रदेश कार्यालय में आयोजित पत्रकार वार्ता में राहुल टिकरिहा ने बताया कि अभियान की शुरूआत दंतेवाड़ा जिले के बचेली से की गई। बस्तर संभाग के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में भी युवाओं को भाजपा की विचारधारा से जोड़ने के लिए विशेष अभियान

चलाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में शांति और विकास के नए वातावरण के बीच युवाओं का भाजपा के प्रति विश्वास लगातार बढ़ रहा है।

उन्होंने बताया कि सदस्यता अभियान ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों से चल रहा है। www.join-bjymcg.com के माध्यम से युवा स्वयं सदस्य बन सकते हैं तथा रेफरल कोड के जरिए अन्य युवाओं को भी जोड़ सकते हैं। अब तक सिर्फ 7 दिनों में 18,846 युवाओं ने सदस्यता लेकर अपना प्रमाण-पत्र भी प्राप्त कर लिया है।

राहुल टिकरिहा ने बताया कि 8 अगस्त को सरगुजा तथा 9 से 14 अगस्त तक सरगुजा संभाग के सभी छह जिलों में सदस्यता अभियान के विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

पत्रकार वार्ता में भाजपा प्रदेश मीडिया सह-संयोजक राहुल राय, भाजयुमो प्रदेश मीडिया प्रभारी वासु शर्मा, रायपुर शहर जिलाध्यक्ष अर्पित सूर्यवंशी एवं रायपुर ग्रामीण जिलाध्यक्ष पिंटू साहू उपस्थित रहे।

स्वच्छता की ओर बढ़ते कदम, श्रमदान से गांवों ने दिया जिम्मेदारी का संदेश

*** ओड़गी और रामानुजनगर में 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान के तहत सामूहिक श्रमदान, सरकारी परिसरों की हुई साफ-सफाई**

सूरजपुर, 01 अगस्त 2026 द शूटर। किसी भी समाज की पहचान केवल उसकी इमारतों से नहीं, बल्कि वहां रहने वाले लोगों की सोच और स्वच्छता के प्रति उनकी जिम्मेदारी से होती है। इसी सोच को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से शनिवार को सूरजपुर जिले के ओड़गी और रामानुजनगर जनपद पंचायत क्षेत्र की सभी ग्राम पंचायतों में 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान के तहत व्यापक स्तर पर सामूहिक श्रमदान किया गया। ग्रामीणों, जनप्रतिनिधियों और पंचायत अमले ने एकजुट होकर साफ-सफाई में हिस्सा लिया और स्वच्छ गांव का संदेश दिया।कलेक्टर श्रीमती रेना जमील के निर्देश तथा जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन

अधिकारी विजेंद्र सिंह पाटले के मार्गदर्शन में संचालित इस अभियान के दौरान शासकीय भवनों और सार्वजनिक परिसरों की विशेष साफ-सफाई की गई।अभियान में ग्राम पंचायत प्रतिनिधियों, पंचायत सचिवों, स्वच्छता कर्मियों, आंगनबाड़ी कार्यकताओं तथा बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सभी ने मिलकर स्कूल भवनों, आंगनबाड़ी केंद्रों, पंचायत भवनों और अन्य शासकीय परिसरों की सफाई की। श्रमदान के दौरान लोगों ने यह संदेश भी दिया कि स्वच्छता केवल सरकारी जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का नैतिक कर्तव्य है।

अधिकारियों ने बताया कि अभियान का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता के प्रति जनजागरूकता बढ़ाना, सामुदायिक सहभागिता को मजबूत करना और सार्वजनिक स्थलों को स्वच्छ एवं व्यवस्थित बनाए रखना है। लोगों को नियमित साफ-सफाई अपनाने और अपने घरों के साथ-साथ आसपास के वातावरण को भी स्वच्छ रखने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। जिला प्रशासन के अनुसार, स्वच्छता ही सेवा अभियान को जिले के अन्य विकासखंडों में भी चरणबद्ध तरीके से संचालित किया जाएगा, ताकि जनभागीदारी के माध्यम से स्वच्छ, स्वस्थ और जागरूक समाज के निर्माण के लक्ष्य को और मजबूती मिल सके।

ग्रामीण विकास की रफ्तार पर सीईओ की पैनी नजर, गुणवत्ता से समझौता नहीं, समय पर पूरे हों सभी कार्य

सूरजपुर, 01 अगस्त 2026, द शूटर। गांवों की तस्वीर सिर्फ योजनाएं बनाकर नहीं बदली जा सकती, बल्कि उनका ईमानदारी से जमीन पर क्रियान्वयन ही असली बदलाव की पहचान होता है। इसी सोच के साथ जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी विजेंद्र सिंह पाटले लगातार ग्रामीण विकास योजनाओं की निगरानी कर रहे हैं। शनिवार को जिला पंचायत सभाकक्ष में पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग की समीक्षा बैठक आयोजित की गई, जिसमें जिलेभर में संचालित योजनाओं की प्रगति का बारीकी से आकलन किया गया और अधिकारियों को गुणवत्ता व समयबद्धता के साथ कार्य पूरा करने के स्पष्ट निर्देश दिए गए।बैठक में डीडी पंचायत, सभी जनपद पंचायतों के मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत के अधिकारी तथा मैदानी अमला मौजूद रहा। इस दौरान महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा), प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण), स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण), राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (बिहान), महतारी सदन निर्माण सहित पंचायतों में चल रहे विकास एवं निर्माण कार्यों की विस्तार से समीक्षा की गई।ग्रामीण आजीविका मिशन की समीक्षा करते हुए सीईओ श्री पाटले ने कहा कि अधिक से अधिक महिलाओं को स्व-सहायता समूहों से जोड़कर उन्हें स्वरोजगार और आजीविका गतिविधियों से जोड़ा जाए, ताकि ग्रामीण परिवार आर्थिक रूप से सशक्त बन सकें।प्रधानमंत्री आवास योजना की समीक्षा के दौरान उन्होंने निर्देश दिए कि प्रत्येक स्वीकृत आवास की नियमित मॉनिटरिंग की जाए। निमार्णाधीन मकानों का तकनीकी अमला लगातार

स्थल निरीक्षण करे और निर्माण के दौरान आने वाली समस्याओं का तत्काल समाधान सुनिश्चित करे, ताकि सभी आवास तय समय सीमा के भीतर गुणवत्तापूर्ण तरीके से पूर्ण हो सकें।

स्वच्छ भारत मिशन को लेकर भी सीईओ ने अधिकारियों को गंभीरता से कार्य करने की हिदायत दी। उन्होंने कहा कि प्रत्येक ग्राम पंचायत में स्वच्छता गतिविधियों को जनभागीदारी के साथ प्रभावी ढंग से संचालित किया जाए और हर पंचायत अपनी स्वच्छ पहचान स्थापित करने की दिशा में काम करे।बैठक में डोर-टू-डोर कचरा संग्रहण, ठोस एवं प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन, व्यक्तिगत शौचालय निर्माण, सामुदायिक एवं सार्वजनिक स्थलों पर सोकपिट निर्माण, ग्रामीण अभियांत्रिकी सेवा (आरईएस) तथा अन्य विभागीय योजनाओं एवं निर्माण कार्यों की प्रगति की भी विस्तार से समीक्षा की गई। अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए गए कि विकास कार्यों में किसी भी स्तर पर लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी और योजनाओं का लाभ समय पर पात्र हितग्राहियों तक पहुंचना सुनिश्चित किया जाए। बैठक के अंत में सीईओ विजेंद्र सिंह पाटले ने कहा कि ग्रामीण विकास की योजनाओं का उद्देश्य केवल निर्माण कार्य कराना नहीं, बल्कि गांवों के लोगों के जीवन स्तर में स्थायी सुधार लाना है। इसके लिए सभी अधिकारियों और मैदानी अमले को पूरी जिम्मेदारी, पारदर्शिता और संवेदनशीलता के साथ कार्य करना होगा।

जब किसी अनजान की धड़कन बचाने के लिए आगे बढ़े अपने हाथ... रामानुजनगर में रक्तदान शिविर बना मानवता का उत्सव

*** पत्रकार, समाजसेवी, स्काउट-गाइड, शिक्षक और स्वास्थ्यकर्मियों ने किया स्वैच्छिक रक्तदान, 20 यूनिट रक्त हुआ संग्रहित**

रामानुजनगर, 01 अगस्त 2026, द शूटर। अस्पतालों में कई बार जिंदगी सिर्फ एक यूनिट रक्त की प्रतीक्षा करती है। किसी सड़क हादसे में घायल व्यक्ति हो, प्रसूता महिला हो या गंभीर बीमारी से जूझ रहा मरीज, समय पर मिला रक्त उसके जीवन की सबसे बड़ी उम्मीद बन जाता है। इसी उम्मीद को मजबूत करने और समाज में सेवा की भावना को जीवंत रखने के उद्देश्य से शनिवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रामानुजनगर में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। यह आयोजन केवल रक्त संग्रह तक सीमित नहीं रहा, बल्कि मानवता, संवेदनशीलता और सामाजिक सहभागिता का प्रेरक संदेश भी बन गया।

सुबह से ही स्वास्थ्य केंद्र परिसर में रक्तदाताओं का उत्साह देखने लायक था। पत्रकार, समाजसेवी, स्काउट एवं गाइड के सदस्य, शिक्षक, जनप्रतिनिधि और विभिन्न सामाजिक संगठनों से जुड़े लोग एक-एक कर रक्तदान के लिए पहुंचे। सभी के चेहरे पर यही संतोष था कि उनका यह छोटा-सा प्रयास किसी अनजान व्यक्ति के जीवन में नई सुबह ला सकता है।

खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ. प्रियंका शर्मा ने सभी रक्तदाताओं का स्वागत करते हुए कहा कि रक्तदान से बड़ा कोई मानवीय दान नहीं है। उन्होंने कहा कि एक यूनिट रक्त कई मरीजों के उपचार में

उपयोगी साबित होता है, इसलिए स्वस्थ व्यक्ति को समय-समय पर स्वेच्छा से रक्तदान करना चाहिए। उन्होंने युवाओं से विशेष रूप से इस अभियान से जुड़ने का आह्वान किया। शिविर में डॉ. प्रियंका शर्मा, आयुष चिकित्सक डॉ. सीमा त्रिपाठी, शशि तिवारी, राजेश द्विवेदी, ऋषि दूबे, रामानुजनगर के सरपंच राम सिंह, अभिषेक उपाध्याय, स्काउट मास्टर योगेश साहू, संदीप तिवारी, श्रीकांत पांडेय, विवेक शुक्ला, संजू गुप्ता, रघुनाथ जायसवाल, शिवम दूबे सहित अनेक लोगों ने स्वेच्छा से रक्तदान किया। सभी ने समाज के लोगों से भी नियमित रक्तदान करने की अपील की। इस दरम्यान शिविर में कुल 20 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया। यह रक्त भविष्य में दुर्घटना, ऑपरेशन, प्रसव या अन्य आपात स्थितियों में जरूरतमंद मरीजों के उपचार में उपयोग किया जाएगा। रक्तदान शिविर को सफल बनाने में जिला चिकित्सालय सूरजपुर से पहुंची टीम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डॉ. यशोदा मिर्धा (पैथोलॉजिस्ट), अशोक सिंह (एमएलटी), शालिनी गुर्जर, अंजली साहू (काउंसलर) तथा जय सिंह ने रक्त संग्रहण एवं तकनीकी व्यवस्थाओं का जिम्मा संभाला। पूरी प्रक्रिया स्वास्थ्य मानकों के अनुरूप संपन्न हुई।

रक्तदान के बाद सभी रक्तदाताओं को प्रमाण-पत्र और प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में मौजूद लोगों ने कहा कि रक्तदान ऐसा दान है, जिसका लाभ सीधे किसी की जिंदगी बचाने में मिलता है। इसलिए प्रत्येक स्वस्थ नागरिक को वर्ष में कम से कम एक बार रक्तदान अवश्य करना चाहिए। कार्यक्रम के अंत में सभी ने संकल्प लिया कि वे स्वयं नियमित रक्तदान करेंगे और समाज के अधिक से अधिक लोगों को भी इस जीवनदायी अभियान से जोड़ने का प्रयास करेंगे।

16 अगस्त से सूरजपुर पहुंचेगी लाइफलाइन एक्सप्रेस, जरूरतमंदों के लिए नि:शुल्क इलाज का सुनहरा अवसर

सूरजपुर, 01 अगस्त/ द शूटर। कई बार इलाज की कमी सिर्फ बीमारी नहीं बढ़ाती, बल्कि एक पूरे परिवार की उम्मीद भी कमजोर कर देती है। ऐसे में सूरजपुर जिले के जरूरतमंद लोगों के लिए राहत की बड़ी खबर है। इम्पैक्ट इंडिया फाउंडेशन की 256वीं लाइफलाइन एक्सप्रेस एक बार फिर जिले में स्वास्थ्य सेवाओं की नई उम्मीद लेकर आ रही है। 16 अगस्त से 5 सितंबर 2026 तक विश्रामपुर रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म क्रमांक-2 पर लगने वाले इस विशेष शिविर में विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा विभिन्न गंभीर बीमारियों की निःशुल्क जांच, उपचार और जरूरत पड़ने पर सर्जरी भी की जाएगी।शिविर में प्रतिदिन सुबह 9 बजे से शाम 4 बजे तक ओपीडी संचालित होगी। मरीजों की आंखों की जांच और मोतियाबिंद ऑपरेशन, कान संबंधी बीमारियों की जांच एवं सर्जरी, कटे-फटे होंठ और जलने के बाद बने संकुचन की प्लास्टिक सर्जरी, दांतों का उपचार तथा महिलाओं के लिए स्तन और गर्भाशय ग्रीवा (सर्वाइकल) कैंसर की जांच एवं स्क्रीनिंग

की सुविधा उपलब्ध रहेगी। वहीं 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों के मुड़े हुए हाथ-पैर की जांच और सर्जरी भी पूरी तरह निःशुल्क की जाएगी।कार्यक्रम के अनुसार आंखों की ओपीडी 16 से 21 अगस्त तथा सर्जरी 17 से 22 अगस्त तक होगी। कान की ओपीडी 22 से 27 अगस्त और सर्जरी 23 से 28 अगस्त तक चलेगी। प्लास्टिक सर्जरी एवं मुड़े हुए हाथ-पैर की ओपीडी 28 से 31 अगस्त तथा सर्जरी 29 अगस्त से 1 सितंबर तक होगी। दांतों की जांच और उपचार 1 से 5 सितंबर तक किया जाएगा, जबकि महिलाओं की स्तन एवं सर्वाइकल कैंसर जांच 16 से 21 अगस्त तक होगी।कलेक्टर श्रीमती रेना जमील के निर्देशन में जिला प्रशासन ने शिविर के सफल संचालन के लिए तैयारियां शुरू कर दी हैं। महिला एवं बाल विकास, स्वास्थ्य तथा पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग को अधिक से अधिक पात्र मरीजों की पहचान कर उनका पंजीयन सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए गए हैं। ग्राम पंचायतों के जनप्रतिनिधियों, मितानिनों, सखियों, आंगनबाड़ी कार्यकताओं एवं सहायिकाओं को भी इस अभियान से जोड़ा गया है, ताकि जिले का कोई भी जरूरतमंद व्यक्ति इस सुविधा से वंचित न रहे।

जिला प्रशासन ने लोगों से अपील की है कि वे इस दुर्लभ अवसर का लाभ उठाएं और अपने आसपास ऐसे मरीजों को भी इसकी जानकारी दें, जिन्हें आर्थिक अभाव के कारण बेहतर इलाज नहीं मिल पाता। शिविर में आने वाले मरीज अपने साथ आधार कार्ड, वोटर आईडी अथवा अन्य वैध पहचान पत्र अवश्य लेकर आएं। भर्ती मरीज के साथ केवल एक सहयोगी को रहने की अनुमति होगी।अधिक जानकारी के लिए 7039673973 पर संपर्क किया जा सकता है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक- रूपेश दुबे द्वारा आर्यन ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस, पॉवर हाउस रोड नमना कला अम्बिकापुर, सरगुजा, छ0ग0 से मुद्रित एवं मेन रोड प्रतापपुर, खोरमा, जिला- सूरजपुर, छ0ग0 से प्रकाशित। संपादक- प्रवीण दुबे* (* समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)। फोन- 07777271215